प्रयागराज, रविवार 26 जुलाई 2026 से 01 अगस्त 2026 तक
वर्ष-14 , अंक-30
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

चीन-रूस जंग में आए तो अंजाम बुरा होगाःपुतिन-जिनपिंग ने मुझे यकीन दिलाया, वे ईरान को हथियार नहीं देंगे-ट्रम्प

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शुक्रवार को कहा कि उन्हें नहीं लगता कि चीन या रूस ईरान युद्ध में शामिल हैं। हालांकि उन्होंने धमकी दी कि अगर दोनों देशों ने इस युद्ध में दखल दिया तो इसके गंभीर नतीजे होंगे और यह उनके लिए अच्छा नहीं होगा। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर लिखा कि हाल ही में बीजिंग में हुई उनकी मुलाकात के दौरान चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने उन्हें भरोसा दिया था कि वे किसी भी हाल में ईरान को हथियार नहीं देंगे। चीनी कंपनियों के लिए भी यही चीज लागू है। ट्रम्प ने कहा मुझे जिनपिंग पर यकीन है। उन्होंने यह भी कहा कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी उनसे कहा था कि वे ईरान को हथियार नहीं बेचेंगे। ट्रम्प ने कहा कि यूक्रेन जंग के बावजूद उनकी पुतिन से बातचीत जारी है। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका सीधे यूक्रेन को हथियार नहीं बेचता, बल्कि नाटो देशों को बेचता है। नाटो देश इन हथियारों की पूरी कीमत चुकाते हैं। उसके बाद वे इन्हें किस तरह आगे भेजते हैं, इसकी उन्हें जानकारी नहीं होती। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स- 1. नेतन्याहू अमेरिका जाएंगे, जंग के बाद पहली बार ट्रम्प से मुलाकातः इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू सोमवार को अमेरिका रवाना होंगे। वह राष्ट्रपति ट्रम्प से मुलाकात करेंगे। दोनों नेताओं की यह मुलाकात ईरान जंग शुरू होने के बाद पहली बार होगी। 2. कच्चा तेल 100 डॉलर प्रति

बैरल के पारः ईरान-अमेरिका में लगातार बढ़ते तनाव के बीच कच्चे तेल की कीमतों में फिर तेज उछाल आया है। ब्रेंट क्रूड का भाव मई के बाद पहली बार 100 डॉलर प्रति बैरल के स्तर को पार कर गया है। 3. कुवैत में 3 अमेरिकी ठिकानों पर हमलाः ईरान ने शुक्रवार को कुवैत में मौजूद अमेरिका के तीन सैन्य ठिकानों पर ड्रोन हमला किया है। इसमें कैंप अरिफजान, कैंप दोहा और कैंप अदैरी को निशाना बनाया गया। 4. ईरान बोला- अमेरिका के आगे नहीं झुकेंगेः ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि ईरान अमेरिका के सामने झुकेगा नहीं और उसकी धमकियां भी बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने यह बयान किर्गिस्तान में एससीओ के विदेश मंत्रियों की बैठक में दिया। 5. होर्मुज में 28 क्रू मेंबर्स वाले एलपीजी टैंकर पर हमलाः ईरान के जलक्षेत्र में एक एलपीजी टैंकर पर हमला हुआ। मोजाम्बिक के झंडे वाला यह टैंकर दिशा 28 भारतीय चालक

डोनाल्ड ट्रम्प-राष्ट्रपति, यूएसए-ईरान की नौसेना खत्म हो चुकी है। उनकी वायु सेना भी खत्म हो चुकी है। उनके 250 विमान अब नहीं रहे और 159 नौकाएं समुद्र में डूब चुकी हैं।

दल के सदस्यों को लेकर जा रहा था। भारतीय दूतावास ने पुष्टि की है कि सभी भारतीय सुरक्षित हैं। होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की आवाजाही अब भी सामान्य नहीं- समुद्री जहाजों की निगरानी करने वाली कंपनी केप्लर ने बताया कि होर्मुज स्ट्रेट से जहाजों की आवाजाही अब भी सामान्य नहीं हुई है। कंपनी के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, गुरुवार को होर्मुज स्ट्रेट से सिर्फ 6 जहाजों के गुजरने की पुष्टि हुई। यह एक दिन पहले के मुकाबले 60 फीसदी कम है। वहीं, बाब अल-मंदेब स्ट्रेट से जहाजों की आवाजाही बढ़ी है। गुरुवार को वहां से 49 जहाजों के गुजरने की पुष्टि हुई।**आगे की खबर पेज संख्या 05 पर..**

नेपाली प्रधानमंत्री पर सुप्रीम कोर्ट में दखल का आरोप, 3 जजों पर इस्तीफे का दबाव बना रहे बालेन, अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने चेतावनी दी

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन शाह की सरकार पर सुप्रीम कोर्ट को अपने पक्ष में करने की कोशिश के आरोप लगे हैं। तीन अंतरराष्ट्रीय संगठनों एमनेस्टी इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स वॉच और इंटरनेशनल कमीशन ऑफ ज्यूरिस्ट्स (आईसीजे) ने संयुक्त बयान जारी कर यह आरोप लगाए हैं। संगठनों का कहना कि सरकार तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों पर इस्तीफा देने का दबाव बना रही है। अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो उनके खिलाफ महाभियोग लाया जा सकता है। संगठनों का कहना है कि सरकार का मकसद सुप्रीम कोर्ट की संरचना बदलना है। उनका आरोप है कि हाल के महीनों में ऐसे कई कदम उठाए गए हैं जिनसे अदालत की स्वतंत्रता कमजोर हो सकती है और संवैधानिक मामलों की सुनवाई प्रभावित हो सकती है। मुख्य न्यायधीश की नियुक्ति को लेकर भी विवाद-बयान में मनोज कुमार शर्मा को नेपाल का मुख्य न्यायाधीश बनाए जाने पर भी सवाल उठाए गए हैं। शर्मा उस समय वरिष्ठता क्रम में चौथे स्थान पर थे। उनसे सीनियर तीन न्यायाधीश को नजरअंदाज कर दिया गया। इसी वजह से विवाद शुरू हुआ। नेपाल में लंबे समय से यह परंपरा रही है कि सुप्रीम कोर्ट के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश को ही मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया जाता है। इस बार इस परंपरा का पालन नहीं किया गया और मनोज शर्मा को तब यह पद दिया गया जब उनसे सीनियर जस्टिस सपना

प्रधान मल्ला, कुमार रेग्मी और हरि फुयाल मौजूद थे। इसके अलावा संगठन का आरोप है कि मनोज कुमार शर्मा के खिलाफ मिली शिकायतों की भी खुली और निष्पक्ष जांच नहीं की गई। संसदीय सुनवाई समिति को शर्मा के खिलाफ कुल 16 शिकायतें मिली थीं। हालांकि ये शिकायतें गोपनीय रखी गई और मीडिया के सामने पेश नहीं की गईं। नेपाल में 70 साल पुरानी परंपरा टूटी- नेपाल के संविधान में कहीं नहीं लिखा है कि सबसे वरिष्ठ जज को ही मुख्य न्यायाधीश बनाया जाएगा। संविधान सिर्फ यह कहता है कि जो व्यक्ति आवश्यक योग्यता पूरी करता हो, उसे नियुक्त किया जा सकता है। पिछले 70 साल से सबसे सीनियर जज ही मुख्य न्यायाधीश बनने की परंपरा चलती आ रही थी। इस साल मार्च में मुख्य न्यायाधीश प्रकाश मान सिंह राउत के रिटायर होने के बाद सपना प्रधान मल्ला कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश की जिम्मेदारी संभाल रही थीं। सुप्रीम कोर्ट की सबसे सीनियर जज होने के कारण मल्ला के चीफ जस्टिस होने का दावा सबसे मजबूत था लेकिन संवैधानिक परिषद ने उनके लिए सिफारिश नहीं की। इस विवाद को लेकर प्रधानमंत्री बालेन शाह ने कहा था कि सिर्फ परंपरा के आधार पर नियुक्तियां नहीं की जानी चाहिए। योग्यता भी जरूरी है। बिना सबूत के जजों पर इस्तीफे का दबाव- बयान में कहा गया है कि सुप्रीम कोर्ट में शर्मा से तीन सीनियर जस्टिस सपना प्रधान मल्ला, कुमार रेग्मी और हरि फुयाल पर इस्तीफा देने का दबाव बनाया जा रहा है। संगठनों का कहना है कि अब तक इन तीनों के खिलाफ ऐसा कोई सार्वजनिक आरोप या ठोस सबूत सामने नहीं आया है, जिससे यह साबित हो कि उन्होंने कोई गंभीर संवैधानिक या कानूनी गलती की है। मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि नेपाल के संविधान के मुताबिक, किसी न्यायाधीश के खिलाफ महाभियोग की प्रक्रिया शुरू होते ही उसे तुरंत निलंबित कर दिया जाता है। अगर सुप्रीम कोर्ट के तीनों वरिष्ठ न्यायाधीशों को एक साथ निलंबित किया गया तो अदालत की संरचना और कामकाज पर बड़ा असर पड़ेगा। यह ऐसे समय में होगा, जब सुप्रीम कोर्ट सरकार के कई अहम फैसलों और संवैधानिक मामलों की सुनवाई कर रही है। संगठनों का कहना है कि अगर बिना ठोस संवैधानिक आधार के महाभियोग का इस्तेमाल किया गया तो इससे यह संदेश जाएगा कि सरकार अदालत की संरचना बदलकर लंबित मामलों के फैसलों को प्रभावित करना चाहती है।

बांग्लादेश के राष्ट्रपति ने इस्तीफा दिया, बताया- बीमार हूं, कई बार बेहोश हो जाता हूं

दावा- शेख हसीना से बातचीत की जानकारी लीक हुई

ढाका। बांग्लादेश के राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने शुक्रवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

उन्होंने अपना इस्तीफा संसद (जातीय संसद) के स्पीकर हाफिज उद्दीन अहमद को सौंपा। राष्ट्रपति ने इस्तीफे की वजह गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं को बताया है। अपने इस्तीफे में शहाबुद्दीन ने लिखा-'मैं लंबे समय से हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और किडनी की बीमारी से जूझ रहा हूं। हाल ही में डॉक्टरों ने मुझमें ऑटोनॉमिक न्यूरोपैथी नाम की बीमारी का पता लगाया है। इस बीमारी की वजह से कई बार अचानक कुछ समय के लिए बेहोशी आ जाती है। शारीरिक और मानसिक स्थिति को देखते हुए अब राष्ट्रपति जैसे महत्वपूर्ण संवैधानिक पद की जिम्मेदारियां निभाना संभव नहीं है।' पिछले कुछ दिनों से बांग्लादेशी मीडिया में उनके इस्तीफे की अटकलें लगाई जा रही थीं। कई रिपोर्टों में दावा किया गया था कि उन्होंने पूर्व पीएम शेख हसीना से फोन पर बातचीत की कोशिश की थी। इस खबर के बाहर आने के बाद प्रधानमंत्री नाराज हो गए थे। हसीना के देश छोड़ने के बाद भी पद नहीं छोड़ा था- मोहम्मद शहाबुद्दीन ने अप्रैल 2023 में राष्ट्रपति पद संभाला था। जुलाई-अगस्त 2024 में हुए छात्र आंदोलन के बाद अवामी लीग सरकार सत्ता से बाहर हो गई थी। उस आंदोलन के कारण तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़ना पड़ा था। **आगे की खबर पेज संख्या 05 पर..**

जापान में राजा अब दूर के रिश्तेदारों को गोद लेंगे, सिर्फ 3 उत्तराधिकारी बचे तो नियम बदला

महिला को सम्राट बनने का अधिकार नहीं मिला

टोक्यो। जापान की संसद ने 17 जुलाई को शाही परिवार के उत्तराधिकार से जुड़े कानून में बड़ा बदलाव किया। नए कानून के तहत अब शाही परिवार 15 साल या उससे अधिक उम्र के दूर के पुरुष रिश्तेदारों को गोद लेकर दोबारा शाही परिवार में शामिल कर सकेगा। इसके अलावा, अब शाही परिवार की महिलाएं किसी आम नागरिक से शादी करने के बाद भी अपना शाही दर्जा और आधिकारिक जिम्मेदारियां नहीं खोएंगी। हालांकि, सबसे अहम नियम नहीं बदला गया। जापान में अब भी सिर्फ पुरुष ही सम्राट बन सकते हैं। यानी सम्राट नारुहितो की इकलौती बेटी राजकुमारी आइको भविष्य में भी सिंहासन की उत्तराधिकारी नहीं बन सकेंगी। शाही परिवार में नियम बदलने की जरूरत क्यों पड़ी-जापान का शाही परिवार दुनिया का सबसे पुराना लगातार चला आ रहा राजवंश माना जाता है, लेकिन आज वह उत्तराधिकार के गंभीर संकट से जूझ रहा है। मौजूदा सम्राट की सिर्फ एक बेटी है। वह उत्तराधिकारी नहीं बन सकती, क्योंकि कानून सिर्फ पुरुषों को ही सिंहासन का अधिकार देता है। शाही परिवार में सिंहासन के सिर्फ 3 उत्तराधिकारी हैं। उत्तराधिकार की कतार में पहले नंबर पर सम्राट के छोटे भाई प्रिंस फुमिहितो, दूसरे नंबर पर उनके 19 वर्षीय बेटे प्रिंस हिसाहितो और तीसरे नंबर पर 90 वर्षीय प्रिंस हिताची हैं। अगर भविष्य में पुरुष उत्तराधिकारी नहीं बढ़े, तो शाही परिवार के सामने उत्तराधिकार का संकट और गहरा सकता है। सरकार के सामने दो ही रास्ते थे- महिलाओं को भी सम्राट बनने की अनुमति दी जाए। दूसरे विश्व युद्ध के बाद शाही परिवार से अलग किए गए पुराने शाही वंश के पुरुषों को वापस लाया जाए। सरकार ने दूसरा रास्ता क्यों चुना- जापान में महिला को सम्राट बनाने का मुद्दा कई वर्षों से चर्चा में है। जनमत सर्वेक्षणों में अधिकांश जापानी नागरिक महिला सम्राट के पक्ष में रहे हैं। 2024 में क्योडो न्यूज के सर्वे में 90फीसदी जापानी नागरिकों ने महिला सम्राट का समर्थन किया था। लेकिन सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के परंपरावादी नेता इसका विरोध करते रहे हैं।**आगे की खबर पेज संख्या 05 पर..**

सऊदी से परमाणु समझौता करने के बाद 24 घंटे में ही पलटे ट्रम्प, जोड़ी नई शर्त, बोले- इजराइल से रिश्ते सुधारे सऊदी-न्यूक्लियर डील अटकी

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका और सऊदी अरब के बीच करीब

दो दशक से अटके परमाणु समझौते पर बुधवार को हस्ताक्षर हुए, लेकिन 24 घंटे के भीतर ही यह डील अटक गई है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने समझौते में नई शर्त जोड़ दी है। उन्होंने कहा कि डील तभी आगे बढ़ेगी, जब सऊदी अरब अब्राहम अकॉर्ड्स में शामिल होकर इजराइल से राजनयिक रिश्ते सामान्य करेगा। ट्रम्प ने यह भी कहा कि सऊदी अरब को यूरेनियम संवर्धन (एनरिचमेंट) की अनुमति नहीं मिलेगी। बिना बताए डील की घोषणा से ट्रम्प नाराज- वॉशिंगटन में हुए हस्ताक्षर समारोह में अमेरिकी ऊर्जा मंत्री क्रिस राइट शामिल हुए थे। रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रम्प इस बात से नाराज थे कि राइट ने उनकी मंजूरी के बिना समझौते की घोषणा कर दी। इसके बाद फॉक्स न्यूज और वॉल स्ट्रीट जर्नल में हुई आलोचना से उनकी नाराजगी और बढ़ गई। रिपोर्ट के अनुसार, व्हाइट हाउस ने ऊर्जा विभाग से समझौते की घोषणा टालने को कहा था, लेकिन विभाग ने हस्ताक्षर समारोह भी किया और मीडिया में इसकी जानकारी भी दी। हालांकि व्हाइट हाउस का कहना है कि अब्राहम अकॉर्ड्स की शर्त शुरू से ही ट्रम्प की नीति का हिस्सा थी। वहीं ऊर्जा विभाग ने किसी भी मतभेद से इनकार किया। ट्रम्प की नई शर्त ने सऊदी को भी चौंकाया-सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रम्प की घोषणा से सऊदी अरब भी हैरान रह गया। समझौते के मसौदे में कुछ शर्तें पूरी होने पर सऊदी अरब को अपनी जमीन पर यूरेनियम संवर्धन की अनुमति मिलने की बात थी, लेकिन ट्रम्प ने इसे सार्वजनिक रूप से खारिज कर दिया। दोनों देशों ने करीब दो दशक पहले परमाणु ऊर्जा सहयोग की पहल की थी। पिछले साल अक्टूबर में प्रारंभिक सहमति बनी थी। रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान युद्ध और कांग्रेस की संभावित आपत्तियों के कारण समझौता महीनों तक अटका रहा। पिछले सप्ताह ऊर्जा विभाग को लगा कि ट्रम्प की मंजूरी मिल गई है, जिसके बाद इसकी घोषणा कर दी गई। परमाणु एक्सपर्ट्स ने यूरेनियम संवर्धन की अनुमति और आईएईए के अतिरिक्त सुरक्षा प्रोटोकॉल की गैरमौजूदगी पर चिंता जताई। वहीं समर्थकों का तर्क था कि अगर अमेरिका पीछे हटता है तो चीन या रूस सऊदी अरब में अपनी रणनीतिक पकड़ मजबूत कर सकते हैं। आखिर अब्राहम अकॉर्ड्स है क्या, जिसे लेकर डील अटक गई? दरअसल, अब्राहम अकॉर्ड्स 2020 में अमेरिका की पहल पर हुआ ऐसा समझौता है, जिसके तहत कुछ अरब देशों ने पहली बार इजराइल के साथ अपने रिश्ते सामान्य किए।**आगे की खबर पेज संख्या 05 पर..**

अमेरिका में जेनेरिक दवाओं पर ट्रम्प का नया टैरिफ प्लान-2 साल 0फीसदी, फिर 100फीसदी और 200फीसदी ड्यूटी

भारत की फार्मा कंपनियों पर असर संभव

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका में आयात होने वाली जेनेरिक दवाओं पर टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। अगले दो साल तक ये दवाएं बिना किसी ड्यूटी के अमेरिका जा सकेंगी, लेकिन इसके बाद 100फीसदी और फिर 200फीसदी तक टैरिफ लगाया जाएगा। ट्रम्प के इस फैसले का भारतीय फार्मा इंडस्ट्री पर क्या असर पड़ेगा और अमेरिका ने यह कदम क्यों उठाया है, ट्रम्प ने जेनेरिक दवाओं के टैरिफ को लेकर क्या ऐलान किया है?जवाबः अमेरिकी राष्ट्रपति ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर बताया कि 1 अगस्त 2026 से अमेरिका में आने वाली सभी

जेनेरिक दवाओं पर अगले दो सालों तक शून्य टैरिफ जारी रहेगा। दो साल बाद अगले एक साल के लिए टैरिफ 100फीसदी और उसके बाद इसे 200फीसदी हो जाएगा। सवाल 2: ट्रम्प प्रशासन ने इतना भारी टैरिफ लगाने की क्या वजह बताई है? जवाबः ट्रम्प के मुताबिक, इस नीति का मुख्य उद्देश्य जेनेरिक दवाओं के मैन्युफैक्चरिंग प्लांट अमेरिका के भीतर वापस लाना है। उन्होंने कहा कि जिन कंपनियों को समय सीमा दी गई है, अगर वे अमेरिका के भीतर अपने प्लांट और उपकरण नहीं लगाती हैं, तो उन्हें पेनल्टी के रूप में टैरिफ चुकाना होगा। हालांकि, पेटेंटेड, ब्रांडेड या इनोवेटिव दवाओं पर मौजूदा नीति पहले की तरह ही बनी रहेगी। सवाल 3: अमेरिकी हेल्थकेयर सिस्टम में जेनेरिक दवाओं का कितना इस्तेमाल होता है? जवाबः अमेरिका के फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन के आंकड़ों के मुताबिक, अमेरिका में डॉक्टरों की लिखी जाने वाली कुल दवाओं में 90फीसदी से अधिक हिस्सेदारी जेनेरिक दवाओं की ही होती है। वहां का हेल्थकेयर सिस्टम काफी हद तक सस्ती जेनेरिक दवाओं पर निर्भर है। सवाल 4: इस फैसले का भारत पर क्या और कितना असर पड़ेगा? जवाबः भारत को 'दुनिया की फार्मेसी' कहा जाता है। अगर टैरिफ बढ़ाकर 100फीसदी और 200फीसदी किया जाता है, तो भारतीय दवाओं की लागत अमेरिकी बाजार में काफी बढ़ जाएगी। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव की रिपोर्ट के अनुसारः-**आगे की खबर पेज संख्या 05 पर..**

ईरान पर सबसे बड़े हमले की तैयारी में अमेरिका, ट्रम्प बोले- फैसला लेना बाकी

ईरान ने कहा- इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि अमेरिका ईरान पर सबसे बड़ा हमला करने के लिए

तैयार है। उन्होंने कहा, 'तैयारी पूरी है, अब सिर्फ फैसला लेना बाकी है।' ट्रम्प ने यह भी कहा कि ईरान ने अभी तक पर्याप्त दर्द नहीं झेला है। ट्रम्प के बयान के बाद ईरान ने भी तुरंत जवाब दिया। विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि अगर अमेरिका ने हमले जारी रखे तो उसे इसकी 'भारी कीमत' चुकानी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि युद्ध खत्म करने का रास्ता बातचीत है, नए हमले नहीं। इधर, ब्रिटेन ने भी अपनी सेना को अलर्ट पर रखा है। ब्रिटिश सरकार का कहना है कि जरूरत पड़ने पर उसकी सेना देश की सुरक्षा के लिए तैयार है। इससे पहले ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड ने चेतावनी दी थी कि अगर अमेरिका ने ब्रिटेन के सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल किया तो उन्हें भी निशाना बनाया जा सकता है। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स- 1. सऊदी के दो जहाजों पर हमलाः यमन के हूती विद्रोहियों ने रेड सी में सऊदी अरब के दो तेल टैंकर एन्सेलिया और लैला पर बैलिस्टिक मिसाइलों, क्रूज मिसाइलों और ड्रोन से हमला किया। संगठन का कहना है कि दोनों जहाजों में आग लग गई। 2. हूती विद्रोहियों के डर से 10 जहाजों ने रास्ता बदलाः बाब अल-मंदेब स्ट्रेट पार करने की कोशिश कर रहे कम से कम 10 जहाजों को अपना रास्ता बदलना पड़ा है। अब ये जहाज अफ्रीका के दक्षिणी सिरे केप ऑफ गुड होप के रास्ते लंबा सफर तय कर रहे हैं। 3. ब्रिटेन ने अमेरिका को सैन्य अड्डों के इस्तेमाल की मंजूरी दीः ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री एंडी बर्नहैम ने ईरान के खिलाफ अमेरिका को ब्रिटिश सैन्य अड्डों के इस्तेमाल को मंजूरी दे दी है। हिंद महासागर में डिएगो गार्सिया और ग्लॉस्टरशायर का फेयरफोर्ड एयरबेस अमेरिकी विमानों के इस्तेमाल के लिए उपलब्ध रहेंगे। 4. भारत की अब तक 26,000 उड़ानें रद्दः अमेरिका-ईरान संघर्ष के कारण 20 जुलाई तक भारतीय एयरलाइंस को करीब 26 हजार अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। इसके अलावा कई उड़ानों का रास्ता बदला गया और उनमें देरी भी हुई। 5. ट्रम्प का 95 अरब डॉलर का रक्षा बजट पासः ट्रम्प को ईरान युद्ध के बीच बड़ी राजनीतिक जीत मिली है। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने 95 अरब डॉलर का रक्षा बजट प्रस्ताव 216-214 वोटों से मंजूर कर दिया।अब इसे मंजूरी के लिए सीनेट में जाएगा। इससे ईरान युद्ध और अन्य राष्ट्रीय सुरक्षा जरूरतों के लिए अतिरिक्त फंड मिलेगा।

शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा, दीपके बोले- वे कहते थे इस सरकार में इस्तीफे नहीं होते

नयी दिल्ली। शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस्तीफा दे दिया है। नीट पेपर लीक केस में उनके इस्तीफे की मांग करते हुए कॉकरोच जनता पार्टी पिछले 36 दिन से जंतर-मंतर पर धरना दे रही है। इस्तीफे के बाद जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के प्रमुख अभिजीत दीपके ने कहा- वे कहते थे, इस सरकार में इस्तीफे नहीं होते, लेकिन झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए। प्रधान ने इस्तीफे को लेकर चिट्ठी पोस्ट की। दो पेज और 575 शब्दों में लिखी इस चिट्ठी में प्रधान ने बाकी बातों के साथ दो जगह युवाओं को भ्रमित करने की बात भी लिखी। चिट्ठी का यह हिस्सा नीचे हाइलाइट किया गया है। दीपके बोले- कॉकरोच एक बार घुसता है तो निकलता नहीं है-जंतर-मंतर पर अभिजीत दीपके ने कहा- मंत्री का इस्तीफा तो हो गया है, लेकिन हमारी दो और मांगे हैं। हम ऐसे नहीं जाएंगे कॉकरोच एक बार घुसता है तो निकलता नहीं है। जिन बच्चों ने सुसाइड किया उनके परिवार को एक करोड़ मुआवजा मिले। पुलिस वालों पर एक्शन होना चाहिए। दिल्ली पुलिस अधिकारी याद रखें कॉकरोच से पंगा लिया है। हमने तो एक मंत्री का इस्तीफा ले लिया, तो तुम लोग क्या चीज हो। छात्रों पर केस वापस होने चाहिए। भैया ये लोकतंत्र है। मुझे एक महीने से लोग कहते थे क्या कर रहे हो कब तक बैठोगे। ये इस्तीफा नहीं देंगे। ये मनमानी सरकार है। मगर हमने कर दिखाया।

डीएम ने मुंशीगंज शहीद स्मारक के निर्माणाधीन कार्यों का किया स्थलीय निरीक्षण,स्मारक परिसर में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित कराने के दिए गए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने मुंशीगंज स्थित

ऐतिहासिक शहीद स्मारक का स्थलीय निरीक्षण कर पर्यटन विभाग द्वारा कराए जा रहे निर्माण एवं सौंदर्यीकरण कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्माणाधीन कार्यों की प्रगति, गुणवत्ता एवं निर्धारित मानकों के अनुरूप कराए जा रहे कार्यों की विस्तार से समीक्षा की तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि मुंशीगंज शहीद स्मारक जनपद की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर है, ऐसे महत्वपूर्ण स्थल का विकास भी उच्च गुणवत्ता के साथ किया जाना चाहिए, ताकि यहां आने वाले नागरिकों एवं पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सकें तथा शहीदों के प्रति सम्मान की भावना और अधिक सुदृढ़ हो। जिलाधिकारी ने स्मारक परिसर में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश देते हुए कहा कि विशेष रूप से पाथवे पर उच्च गुणवत्ता की लाइटें लगाई जाएं, जिससे रात्रि के समय भी परिसर सुरक्षित एवं आकर्षक दिखाई दे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रकाश व्यवस्था इस प्रकार विकसित की जाए कि पूरे परिसर में कहीं भी अंधेरा न रहे। उन्होंने निर्माण कार्यों का बारीकी से निरीक्षण करते हुए संबंधित अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्था को निर्देश दिए

कि शेष सभी कार्यों को गुणवत्तापूर्ण, निर्धारित मानकों के अनुरूप तथा समयबद्ध तरीके से प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण कराया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि कार्य पूर्ण होने तक नियमित रूप से निगरानी की जाए तथा प्रत्येक चरण की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए।जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थलों का संरक्षण और विकास जनपद की प्राथमिकता है। इसलिए सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए निर्धारित समय सीमा में निर्माण कार्य पूर्ण कराएं, ताकि आमजन एवं पर्यटकों को बेहतर सुविधाओं का लाभ मिल सके।निरीक्षण के दौरान जिला अर्थ एवं सांख्यिकी अधिकारी सुधीर गिरी, पर्यटन अधिकारी तनुजा यादव सहित कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधि व संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

नगरीय क्षेत्रों के सुनियोजित एवं समग्र विकास के लिए सभी विभाग समन्वय के साथ करें कार्य-डीएम

नगर पालिका एवं नगर पंचायत अध्यक्षों के साथ समीक्षा बैठक सम्पन्न,आधारभूत सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण और विकास कार्यों में तेजी लाने के दिए गए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में

कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद के नगरीय क्षेत्रों वे समग्र, सुव्यवस्थित एवं सतत विकास के उद्देश्य से नगर पालिका एवं नगर पंचायतों के अध्यक्षों के साथ समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में नगर निकायों में संचालित विकास कार्यों, आधारभूत सुविधाओं के विस्तार तथा शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर विस्तृत चर्चा की गई। जिलाधिकारी ने कहा कि नगरों का सुव्यवस्थित विकास तभी संभव है, जब सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें तथा विकास परियोजनाओं को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण कराया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं एवं विकास परियोजनाओं के लिए आवश्यक भूमि की उपलब्धता समय रहते सुनिश्चित की जाए, ताकि किसी भी परियोजना के क्रियान्वयन में अनावश्यक विलंब न हो।जिलाधिकारी ने नगरीय क्षेत्रों में स्वच्छता एवं जनस्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए पशुओं के शवों के उचित एवं सुरक्षित निस्तारण के लिए उपयुक्त भूमि का शीघ्र चिन्हांकन करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था से स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के साथ-साथ नागरिकों को होने वाली असुविधाओं से भी राहत मिलेगी। बैठक में नगरीय क्षेत्रों में जर्जर एवं पुराने विद्युत तारों को चरणबद्ध तरीके से बदलने, सड़कों पर पर्याप्त एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा विद्युत सुरक्षा को प्राथमिकता देने पर विशेष बल दिया गया। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि नागरिकों की सुरक्षा एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए आवश्यक कार्यों में तेजी लाई जाए। उन्होंने नगर क्षेत्रों में बढ़ते यातायात दबाव को देखते हुए उपयुक्त स्थानों पर पार्किंग स्थलों के विकास, प्रमुख मार्गों एवं बाजारों को अतिक्रमण मुक्त कराने तथा यातायात व्यवस्था को अधिक सुगम एवं व्यवस्थित बनाने के निर्देश दिए, साथ ही नियमित अभियान चलाकर अवैध अतिक्रमण हटाया जाए, जिससे आमजन को आवागमन में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। जिलाधिकारी ने बैठक में हर घर नल योजना की प्रगति की भी समीक्षा की एवं निर्देश दिए कि योजना के अंतर्गत प्रत्येक पात्र परिवार तक शुद्ध पेयजल की सुविधा समयबद्ध रूप से पहुंचाई जाए तथा जिन क्षेत्रों में कार्य शेष है, वहां तेजी से कार्य पूर्ण कराया जाए। जिलाधिकारी ने सभी नगर पालिका एवं नगर पंचायत अध्यक्षों तथा संबंधित अधिकारियों से अपेक्षा की कि वे जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए विकास कार्यों की नियमित निगरानी करें तथा शासन की योजनाओं का लाभ प्रत्येक नागरिक तक पहुंचाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि नगरीय क्षेत्रों को स्वच्छ, सुरक्षित, व्यवस्थित एवं नागरिक सुविधाओं से परिपूर्ण बनाना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। बैठक में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद शत्रोहन सोनकर सहित जनपद की समस्त नगर पालिका एवं नगर पंचायतों के अध्यक्ष एवं संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने जेल रोड पर किया वृक्षारोपण,वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण एवं हरित विकास का दिया संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने आज जेल रोड स्थित

इंदिरा नगर पावर हाउस के समीप वृक्षारोपण कर जनपद में हरित पर्यावरण को बढ़ावा देने एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। लोक निर्माण विभाग द्वारा जेल रोड में 1.5 कि0मी0 सड़क की दोनों पटरियों पर वृहद स्तर पर वृक्षारोपण अभियान संचालित किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत छायादार, फलदार व छोटे शोभाकार वृक्षों को रोपित कराया जा रहा है।जिलाधिकारी ने रोपित पौधों का अवलोकन करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि पौधों की नियमित सिंचाई, सुरक्षा एवं समुचित देखभाल सुनिश्चित की जाए, ताकि उनका संरक्षण हो सके और अधिकतम पौधे विकसित होकर पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण केवल पौधे लगाने तक सीमित न रहे, बल्कि उनकी देखरेख और संरक्षण भी उतनी ही गंभीरता से किया जाए। जनपद को अधिक हरित, स्वच्छ एवं प्रदूषणमुक्त बनाने के उद्देश्य से सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ वृक्षारोपण अभियान को सफल बनाएं। इस अवसर पर अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग महिपाल सिंह सहित संबंधित अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहें।

'साथी पोर्टल' से जुड़े बिना नहीं होगा बीज व्यवसाय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला कृषि अधिकारी अखिलेश पाण्डेय ने बताया है कि किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले प्रमाणित बीजों की समयबद्ध एवं अपंजीकृत डीलर अथवा वितरक के माध्यम से बीज व्यवसाय करना पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। जनपद वे सभी बीज विक्रेताओं, डिस्ट्रीब्यूटरों, सहकारी समितियों

बीज उत्पादन, स्टॉक प्रबंधन एवं विक्रय की पूरी प्रक्रिया होगी ऑनलाइन और पारदर्शी

पारदर्शी उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा विकसित 'साथी पोर्टल' को बीज उत्पादन, प्रमाणीकरण, स्टॉक प्रबंधन तथा विक्रय वे लिए अनिवार्य रूप से लागू किया जा रहा है। उन्होंने बताया है कि कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश (बीज एवं प्रक्षेत्र अनुभाग), लखनऊ तथा शासन के निर्देशानुसार अब बीज व्यवसाय से संबंधित समस्त गतिविधियां साथी पोर्टल के माध्यम से ही संचालित की जाएंगी। बीज उत्पादन से लेकर फसल पंजीकरण, क्षेत्र निरीक्षण, बीज स्रोत सत्यापन, नमूना परीक्षण, टैग एवं प्रमाण-पत्र जारी करने तक की संपूर्ण प्रक्रिया डिजिटल माध्यम से संपादित होगी।बीज प्रसंस्करण संयंत्रों पर बीज की आवक, प्रसंस्करण, पैकिंग, लॉट निर्माण, नमूना ग्रहण तथा स्टॉक संबंधी सभी प्रविष्टियां साथी पोर्टल पर दर्ज करना अनिवार्य होगा। इसके साथ ही आवश्यकतानुसार भौतिक अभिलेख भी सुरक्षित रखे जाएंगे। बीज का स्टॉक स्थानांतरण, विक्रय एवं वापसी केवल साथी पोर्टल के माध्यम से ही मान्य होगी। तथा सरकारी बीज विक्रय केंद्रों का साथी पोर्टल पर ऑन-बोर्ड होना अनिवार्य है। पोर्टल के माध्यम से किसान स्तर तक प्रत्येक बीज लेनदेन का डिजिटल रिकॉर्ड उपलब्ध रहेगा, जिससे बीज की गुणवत्ता, उपलब्धता एवं ट्रेसाबिलिटी सुनिश्चित होगी। यदि पोर्टल पर प्रदर्शित स्टॉक एवं भौतिक स्टॉक में किसी प्रकार की विसंगति पाई जाती है तो संबंधित के विरुद्ध बीज अधिनियम-1966, बीज नियम-1968, बीज नियंत्रण आदेश-1983 तथा आवश्यक वस्तु अधिनियम-1955 के अंतर्गत नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। जिला कृषि अधिकारी ने जनपद के सभी बीज उत्पादकों, डीलरों, वितरकों एवं संबंधित संस्थाओं से अपील की है कि वे 28 जुलाई 2026 तक शीघ्र साथी पोर्टल पर अपना पंजीकरण पूर्ण कर शासन के निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करें। साथ ही किसानों से भी आग्रह है कि वे प्रमाणित एवं गुणवत्तायुक्त बीज केवल साथी पोर्टल से जुड़े अधिकृत विक्रेताओं से ही क्रय करें, जिससे उन्हें गुणवत्तापूर्ण बीज के साथ पारदर्शी एवं विश्वसनीय सेवा प्राप्त हो सके।

उ0प्र0 राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्र, सीएचसी हरचन्दपुर व बालिका गृह का किया निरीक्षण

उपाध्यक्ष ने जिला पंचायत सभागार में महिला उत्पीड़न से संबंधित सुनीं शिकायतें,मा0 उपाध्यक्ष ने महिलाओं से जुड़ी विभिन्न योजनाओं को जन-जन तक पहुचाने के लिए दिये निर्देश,महिला जनसुनवाई में प्राप्त हुई 09 शिकायते

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग अपर्णा यादव ने जनपद भ्रमण के दौरान विकास

खण्ड हरचंदपुर स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने बालिकाओं के से वार्ता कर विद्यालय में मिल रही सुविधाओं/व्यवस्थाओं की जानकारी ली तथा बालिकाओं के साथ भोजन भी किया। उन्होंने कहा कि बालिकाओं के लिए बेहतर सुविधाएं और शिक्षा प्रदान की जाए।तत्पश्चात मा0 उपाध्यक्ष द्वारा विकास खण्ड हरचन्दपुर के प्यारेपुर स्थित आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण किया गया जहां पर 0 से 06 वर्ष तक के बच्चों के शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण वे सम्बन्ध में जानकारी ली गयी तथा आंगनबाड़ी वेन्द्र पर मा0 उपाध्यक्ष द्वारा गर्भवती महिलाओं की गोद भराई की तथा बच्चों को अन्नप्राशन कराया गया तथा केन्द्र पर उपस्थिति आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। इसके पश्चात सामुदायिक स्वास्थ्य वेन्द्र हरचन्दपुर में कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया, कार्यक्रम में नवजात बच्चियों की दादी, नानी, बुआ, मौसी आदि के साथ केक काटकर व 25 महिलाओं को बेबी किट वितरित कर कन्या जन्मोत्सव मनाया गया। उन्होंने उपस्थित महिलाओं को कन्या सुमंगला योजना के लाभ व महिला आयोग के हेल्पलाइन नंबर 1800 180 5220 सहित अन्य योजनाओं की विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को कन्या सुमंगला योजना का लाभ दिलाए जाने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। इसके पश्चात महिला आयोग मा0 उपाध्यक्ष ने बाल गृह (बालिका) चक धरौरा का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बाल गृह में रह रहे बच्चों की सुविधाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने बाल गृह में रह रहे बच्चों से बातचीत की और उनसे बाल गृह में मिल रही सुविधाओं का फीडबैक लिया। उन्होंने बाल गृह के अधिकारियों को निर्देश दिया कि बच्चों को बेहतर सुविधाएं और शिक्षा प्रदान करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएं। बच्चों को समय पर बेहतर भोजन और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं। उनकी सुरक्षा और कल्याण के लिए किए जा रहे प्रयासों पर भी उन्होंने चर्चा की। महिला आयोग की मा0 उपाध्यक्ष ने कहा कि बच्चों के मनोरंजन और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक गतिविधियों का आयोजन किया जाए। इसवे उपरान्त उपाध्यक्ष द्वारा जिला पंचायत सभागार में महिला उत्पीड़न व उनकी समस्याओं से जुड़े मुद्दो के बारे में अधिकारियों से समीक्षा की। बैठक के दौरान उन्होंने जन सुनवाई करते हुए घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, वैवाहिक समस्या, लैंगिक भेदभाव, शिक्षा व रोजगार आदि संबंधी शिकायत सुनी। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये कि सभी प्रकरण को संज्ञान में लेते हुए पीड़ित महिलाओ को शीघ्र न्याय दिलाया जाए। उन्होंने निर्देश दिये कि महिलाओं के उत्पीड़न व महिला से जुड़ी शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्वक एवं समयबद्ध तरीके से किया जाये तथा महिलाओं से सम्बन्धित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार ग्राम पंचायत व ग्रामीण स्तर पर कराया जाये। जिन प्रकरणों में अभी कार्यवाही लंबित है उन्हें भी आयोग के संज्ञान में लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आयोग के निर्देश है कि महिलाओं और बच्चों से संबंधित प्रकरणों में शीघ्र कार्रवाई की जाए। महिला जन सुनवाई के दौरान 09 शिकायत प्राप्त हुई जिन्हें शीघ्र निस्तारित करने का निर्देश दिया गया। मा0 उपाध्यक्ष ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं न्याय सुनिश्चित करना राज्य महिला आयोग की प्राथमिकता है और किसी भी पीड़िता के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। इसी दौरान मा0 उपाध्यक्ष द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों से कहा कि हॉस्पिटल में कन्या के जन्म होने पर महिलाओं को कन्या सुमंगला योजना की जानकारी प्रदान कराते हुए उनको उक्त योजना का लाभ दिलाया जाए, इसवे लिए अस्पतालों में पोस्टर व पंपलेट डिस्प्ले कर महिलाओं को जागरूक किया जाए, जिससे शत प्रतिशत महिलाएं योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सके, कोई भी लाभ से वंचित न रहें। सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार हेतु विद्यालयों के नोटिस बोर्ड पर पंपलेट चस्पा किए जाए, जिससे बच्चों को योजनाओं की जानकारी हो और वह घर जाकर अपने माता पिता को उन योजनाओं की जानकारी दे और वह उसका लाभ उठा सके। बैठक में जिला प्रोबेशन अधिकारी शक्ति त्रिपाठी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी उबैदुरहमान, एसएचओ महिला थाना पुष्पा शर्मा, श्रम प्रवर्तन अधिकारी शशी सिंह, बाल संरक्षण अधिकारी वीरेन्द्र पाल, जिला मिशन कोऑर्डिनेटर शैफाली सिंह, जेण्डर स्पेशलिस्ट पूजा तिवारी, काउंसलर श्रद्धा सिंह, अर्चना सिंह सहित सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

उ.प्र.सरकार द्वारा संचालित विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना एवं एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) प्रशिक्षण एवं टूलकिट योजना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। सर्व साधारण को

सूचित किया जाता है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना एवं एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) प्रशिक्षण एवं टूलकिट योजना वित्तीय वर्ष 2026-27 में समस्त ट्रेडों के कौशल विकास प्रशिक्षण हेतु अभ्यर्थियों का चयन निम्न कार्यक्रम के अनुसार किया जाना है- विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजनाः-ट्रेड दर्जी-दिनांक 27.07.2026, ट्रेड हलवाई एवं टोकरी बुनकर-दिनांक 28.07.2026, ट्रेड लोहार, बढ़ई, नाई एवं राजमिस्त्री-दिनांक 29.07.2026, ट्रेड कुम्हार, सोनार, धोबी एवं मोची- दिनांक 30.07.2026, (ओ0डी0ओ0पी0) समस्त ट्रेड-दिनांक 30.07.2026, समस्त योजनाओं एवं ट्रेड के छूटे हुए अभ्यर्थी-दिनांक 31.07.2026, अतः पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदित समस्त अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि साक्षात्कार हेतु अपने समस्त (आधार कार्ड, बैंक पासबुक, शैक्षिक प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र अनुभव प्रमाण पत्र) प्रमाण पत्रों की छाया प्रति के साथ उपरोक्त दिनांक को पूर्वान्ह 11:00 बजे से 04:00 बजे तक कार्यालय उपायुक्त उद्योग, जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र, 05 नया कटरा, प्रयागराज में उपस्थित होने का कष्ट करें।

विशेष प्रवर्तन अभियान के तहत 48 लीटर अवैध कच्ची शराब व 320 किलो लहन बरामद, 04 अभियोग पंजीकृत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के आदेशानुसार अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी का पुरवा स्थित अवैध कच्ची शराब निर्माण के अड्डो एवं संदिग्ध घरों पर छापेमारी की गई।छापेमारी के दौरान जनपद में कुल 48 लीटर

के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत जिला अवैध कच्ची शराब तथा 320 किलो लहन बरामद किया गया। बरामद

आबकारी अधिकारी के नेतृत्व में आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-2 रोबिन आर्य एवं आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-4 द्वारा मय हमराह विभिन्न स्थानों पर सघन दबिश की कार्रवाई की गई। कार्रवाई वे दौरान महराजगंज तहसील के थाना बछरावा अंतर्गत ग्राम पश्चिम गाँव, उफरापुर एवं नन्दाखेड़ा तथा थाना डीह क्षेत्र के ग्राम आठी एवं ठकुराइन लहन को मौके पर ही नष्ट कर दिया गया। इस संबंध में आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं के अंतर्गत कुल 4 अभियोग पंजीकृत किए गए। जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जनपद में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से इस प्रकार की प्रवर्तन कार्रवाई आगे भी निरंतर जारी रहेगी।

बीआईएस के मानक युवा सम्मान समारोह में आईएमएस के छात्रों को मिला सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भारत सरकार के उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), गाजियाबाद शाखा द्वारा आयोजित मानक युवा सम्मान समारोह में आईएमएस नोएडा के छात्रों एवं सामुदायिक रेडियो सलाम नमस्ते को उपभोक्ता जागरूकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। सोमवार को एके चिल्ड्रन एकेडमी, गाजियाबाद में आयोजित समारोह में आईएमएस के छात्र रोहन को सर्वाधिक उपभोक्ता जागरूकता एवं आउटरीच कार्यक्रम आयोजित करने के लिए 'मानक युवा' सम्मान से नवाजा गया। वहीं शिवप्रताप सिंह एवं रोनित राज को भी उपभोक्ता जागरूकता के क्षेत्र में उनके सराहनीय योगदान के लिए 'मानक युवा' की उपाधि प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान आईएमएस के सामुदायिक रेडियो सलाम नमस्ते को भी 'जागो ग्राहक जागो' अभियान के अंतर्गत उपभोक्ता अधिकारों एवं जागरूकता के व्यापक प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सलाम नमस्ते की स्टेशन हेड बर्षा छबारिया ने बताया कि हमारी टीम ने विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों, सामुदायिक अभियानों एवं जनसंपर्क गतिविधियों के माध्यम से उपभोक्ताओं तक महत्वपूर्ण जानकारी पहुंचाने में सहयोग का परिणाम है। इस अवसर पर आईएमएस के प्रेसिडेंट राजीव कुमार गुप्ता ने सभी सम्मानित छात्रों एवं सलाम नमस्ते कम्युनिटी रेडियो की टीम को बधाई देते हुए कहा कि आईएमएस हमेशा शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व एवं जन जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। उन्होंने कहा कि छात्रों की यह उपलब्धि संस्थान के लिए गर्व का विषय है और भविष्य में भी ऐसे जनहितकारी अभियानों में उनकी सक्रिय भागीदारी जारी रहेगी।

प्रभारी मंत्री हंसराज विश्वकर्मा का दो दिवसीय सोनभद्र दौरा, विकास कार्यों की समीक्षा और जनसंवाद पर रहेगा फोकस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के राज्य मंत्री एवं जनपद सोनभद्र के प्रभारी मंत्री हंसराज विश्वकर्मा का दो दिवसीय सोनभद्र भ्रमण कार्यक्रम जारी किया गया है। अपने दौरे के दौरान प्रभारी मंत्री विकास परियोजनाओं की समीक्षा, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक, जनप्रतिनिधियों एवं पार्टी पदाधिकारियों से संवाद तथा भाजपा के बूथ अध्यक्ष सम्मेलन में भाग लेंगे। 21 जुलाई की शाम प्रभारी मंत्री डाला स्थित अल्ट्राटेक गेस्ट हाउस पहुंचेंगे, जहां विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करेंगे। इसके बाद मंडल के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों एवं पार्टी पदाधिकारियों से भेंट कर संगठनात्मक विषयों पर चर्चा करेंगे। 22 जुलाई की सुबह प्रभारी मंत्री अमवार गेस्ट हाउस पहुंचकर निर्माणाधीन कनहर डैम से संबंधित सिंचाई एवं अन्य परियोजनाओं की प्रगति की विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा करेंगे। इसके बाद वह दुद्धी पहुंचेंगे, जहां तहसील स्तरीय प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक, गांव चौपाल-संवाद तथा जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे। दुद्धी स्थित पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में प्रभारी मंत्री प्रशासनिक अधिकारियों के साथ जनसमस्याओं, विकास कार्यों एवं कानून-व्यवस्था की समीक्षा बैठक करेंगे। इस दौरान समन्वय समिति एवं कोर कमेटी की बैठक भी आयोजित होगी। भ्रमण कार्यक्रम के अंतिम चरण में प्रभारी मंत्री दुद्धी कृषि मंडी परिसर में भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित विधानसभा बूथ अध्यक्ष सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगे।

नवीन व्यवस्था अन्तर्गत सी0एम0 डैशबोर्ड के माध्यम से जिलाधिकारी ने की विकास कार्यों की समीक्षा बैठक

निर्धारित लक्ष्य समय सीमा के अन्दर शत-प्रतिशत निर्माण कार्य कराये जाये पूर्ण-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में नवीन व्यवस्था अन्तर्गत सी0एम0 डैशबोर्ड के माध्यम से विकास कार्यों की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान उन्होंने कहा कि जिन विभागों को शासन द्वारा जो भी लक्ष्य निर्धारित किया गया है, वह उसका शत-प्रतिशत निर्धारित समय अवधि में पूर्ण करना सुनिश्चित करें, इस दौरान पी0एम0 सूर्य घर योजना की समीक्षा की समीक्षा के दौरान उन्होने कहा कि पी0एम0 सूर्य घर योजना के अन्तर्गत बैंक के माध्यम से सब्सिडी आदि की सुविधा बैंक के माध्यम से सुनिश्चित कराये जाये उन्होने एल0डी0एम0 को निर्देशित करते हुए कहा कि पी0एम0 सूर्य घर योजना को अन्तर्गत जो भी लक्ष्य निर्धारित किये गये है उसका सत प्रतिशत निस्तारण बैंको के माध्यम से सुनिश्चित किया जाये। इसी प्रकार से उन्होंने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी लोन योजना के भी प्रगति की समीक्षा की और उपायुक्त उद्योग एवं एल0डी0एम0 को निर्देशित करते हुए कहा कि प्राथमिकता के आधार पर मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना के लाभार्थियों के पत्रावलियों का निस्तारण सुनिश्चित किया जाये, समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देशित करते हुए करते हुए कहा कि विकास कार्यों, लाभार्थीपरक व जन कल्याणकारी योजनाओं जैसे कार्यों के प्रगति में तेजी लायी जाये, अन्यथा की स्थिति में सम्बन्धित अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करते हुए विभागीय कार्यवाही हेतु उच्चाधिकारियों को पत्राचार करना सुनिश्चित किया जायेगा। बैठक के दौरान उन्होने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अधूरे निर्माण कार्यो को तीव्र गति से पूर्ण कराने की कार्यवाही सुनिश्चित किया जाये।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी, जिला विकास अधिकारी श्री हेमन्त कुमार सिंह, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी श्री संतपाल वर्मा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री मुकुल आनन्द पाण्डेय, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी श्री सुधांशु शेखर शर्मा, जिला विद्यालय निरीक्षक श्री जय राम सिंह, डी0सी0 मनरेगा श्री रवीन्द्र वीर सिंह, अपर जिला सूचना अधिकारी श्री विनय कुमार सिंह, परियोजना निदेशक डी0आर0डी0ए0 श्री एस0के0 राय, जिला समाज कल्याण अधिकारी श्री ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहें।

जनगणना-2027: जिला जनगणना हस्त पुस्तिका के समयबद्ध संपादन हेतु अधिकारियों को दिया गया प्रशिक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। भारत की जनगणना-2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत जिला जनगणना हस्त पुस्तिका (डीसीएचबी) के कार्यों के सफल एवं समयबद्ध संपादन के उद्देश्य से सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जनगणना निदेशालय, उ0प्र0 से डिप्टी डायरेक्टर गौरव पाण्डेय द्वारा प्रतिभाग किया गया। जिला जनगणना अधिकारी/अपर जिला अधिकारी (वि.रा.) सहदेव मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपनिदेशक, जनगणना निदेशालय, लखनऊ ने जनपद के समस्त उपजिलाधिकारियों, तहसीलदारों एवं अधिशासी अधिकारियों को जिला जनगणना हस्त पुस्तिका (डीसीएचबी) से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि डीसीएचबी जनपद की भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से जुड़े महत्वपूर्ण आंकड़ों का संकलन है, जिसका उपयोग शासन एवं विभिन्न विभागों द्वारा विकास योजनाओं के निर्माण एवं प्रभावी क्रियान्वयन में किया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान डीसीएचबी के निर्माण, आंकड़ों के संकलन, सत्यापन तथा समयबद्ध रूप से सूचनाएं उपलब्ध कराने की प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा की गई। डिप्टी डायरेक्टर ने अधिकारियों से निर्धारित समय-सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण एवं त्रुटिरहित सूचनाएं उपलब्ध कराने का आह्वान करते हुए जनगणना-2027 के कार्यों को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की। प्रशिक्षण का उद्देश्य जनगणना-2027 के अंतर्गत जिला जनगणना हस्त पुस्तिका के कार्यों को सुव्यवस्थित, प्रभावी एवं समयबद्ध ढंग से संपन्न कराना है। कार्यक्रम में जनपद प्रशिक्षक आशुतोष तिवारी, जिला प्रभारी काजल रानी सहित जनपद के समस्त उपजिलाधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, अधिशासी अधिकारी तथा अन्य संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

बकायेदारों की भूमि की नीलामी 07 अगस्त को

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उपजिलाधिकारी सदर रायबरेली गौतम सिंह ने सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि न्यायालय देय की बकायेदार मो0 अहमद कुरैशी पुत्र स्व0 जान मोहम्मद निवासी उत्तरपारा (बेलाभेला), नौशाद पुत्र वशीर अहमद निवासी रसेहता, मनोज कुमार पासी पुत्र गुरु चरन निवासी कोन्सा एवं छेदी लाल पुत्र विष्णु प्रसाद निवासी अनन्त मजरे मरदानपुर परगना व तहसील सदर जिला रायबरेली की भूमि की सार्वजनिक नीलामी 07 अगस्त 2026 को समय प्रातः 10:00 बजे तहसील परिसर स्थित नायब तहसीलदार पश्चिमी/नीलाम अधिकारी कक्ष में प्रस्तावित है। इच्छुक बोलीदाता निर्धारित तिथि व समय, स्थान पर उपस्थित होकर नीलामी में प्रतिभाग कर सकते है। नीलामी सम्बन्धी शर्तें संबंधित कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में नगरीय निकाय एवं डूडा योजनाओं की समीक्षा बैठक सम्पन्न,थीम आधारित पार्क, फसाड लाइटिंग व चौराहों के सौंदर्यीकरण कराए जाने के दिए गए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में नगरीय निकाय एवं जिला नगरीय विकास अभिकरण (डूडा) द्वारा संचालित योजनाओं एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में नगर क्षेत्रों के सौंदर्यीकरण, पर्यटन विकास, नागरिक सुविधाओं के विस्तार तथा आधारभूत संरचनाओं को सुदृढ़ बनाने के संबंध में विस्तृत समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि जनपद के समस्त नगरीय क्षेत्रों में स्थानीय विशेषताओं के अनुरूप थीम आधारित पार्क विकसित किए जाएं, जिससे नागरिकों को बेहतर मनोरंजन एवं हरित वातावरण उपलब्ध हो सके। उन्होंने कहा कि पार्कों का विकास आकर्षक एवं सुव्यवस्थित रूप में किया जाए तथा उनमें आवश्यक नागरिक सुविधाएं भी सुनिश्चित की जाएं। जिलाधिकारी ने नगरों की सुंदरता एवं आकर्षण बढ़ाने के उद्देश्य से प्रमुख भवनों एवं महत्वपूर्ण स्थलों पर फसाड लाइटिंग कराए जाने, शहर की दीवारों पर स्थानीय संस्कृति, विरासत एवं जनजागरूकता पर आधारित वाल पेंटिंग कराने तथा प्रमुख चौराहों का सौंदर्यीकरण गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध ढंग से पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इन कार्यों से नगरीय क्षेत्रों की पहचान मजबूत होगी और स्वच्छ एवं आकर्षक वातावरण का निर्माण होगा। बैठक में डलमऊ को पर्यटन की दृष्टि से और अधिक विकसित करने पर विशेष जोर दिया गया। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रमुख मंदिरों में फसाड लाइटिंग की व्यवस्था की जाए, श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की सुविधा के लिए पाथवे विकसित किए जाएं तथा पेयजल, प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छ शौचालय, बैठने की व्यवस्था, साफ-सफाई, संकेतक बोर्ड एवं अन्य आवश्यक मूलभूत सुविधाएं प्राथमिकता के आधार पर विकसित की जाएं, ताकि डलमऊ को एक सुव्यवस्थित एवं आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सके।उन्होंने कहा कि सभी विकास कार्य गुणवत्ता, पारदर्शिता एवं निर्धारित समय-सीमा के अनुरूप पूर्ण किए जाएं। प्रत्येक परियोजना की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका स्वर्ण सिंह, जनपद की समस्त नगर पंचायतों के अधिशासी अधिकारी तथा संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

'स्मार्ट सिटी' या बीमारियों का गढ़? मानसून आते ही नोएडा की खुली पोल,नोएडा को स्मार्ट और हाईटेक शहर बनाने के बड़े-बड़े दावों की पोल मानसून के दस्तक देते ही खुल गई है

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जलभराव और खराब सफाई व्यवस्था के कारण शहर में मच्छर जनित बीमारियां तेजी से पांव पसारने लगी हैं और डेंगू के दर्जनों मामले सामने आ चुके हैं। मानसून से पहले बड़े नालों की तली झाड़ सफाई न होने के कारण मुख्य नाले ब्लॉक पड़े हैं, जिससे सेक्टरों की अंदरूनी नालियों में साल भर बदबूदार और गंदा पानी जमा रहता है। हर मोड़ पर ठहरते इस गंदे पानी के कारण मच्छरों के ब्रीडिंग पॉइंट बन रहे हैं, जिससे डेंगू और मलेरिया जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा चरम पर पहुँच गया है। सेक्टर 71 शिव शक्ति अपार्टमेंट के आरडब्ल्यूए महासचिव ने इस बदहाली पर गहरा आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि जनता के वोट से कुर्सी पर बैठे जनप्रतिनिधि इस गंभीर समस्या पर गहरी नींद सो रहे हैं। चुनाव के समय चमचमाती सड़कों और हाईटेक नोएडा के कसीदे पढ़ने वाले ये माननीय आज जलभराव और मच्छरों के आतंक के बीच जनता को उसके हाल पर छोड़कर गायब हैं। कागजों पर तो शहर को स्मार्ट बना दिया गया, लेकिन धरातल पर नागरिक नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं। स्थिति और अधिक गंभीर हो, उससे पहले ही प्राधिकरण और जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों को अपनी कुंभकर्णी नींद तोड़कर ग्राउंड लेवल पर ठोस कदम उठाने होंगे। उन्होंने मांग की है कि मुख्य नालों व अंदरूनी नालियों की तुरंत सुध लेकर तली झाड़ सफाई कराई जाए तथा सभी प्रभावित इलाकों में नियमित फॉगिंग और एंटी-लार्वा का छिड़काव सुनिश्चित किया जाए, ताकि शहरवासियों को बीमारियों के इस प्रकोप से बचाया जा सके।

पीएम-राहत योजना के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित, गोल्डन आवर में कैशलेस उपचार पर दिया गया प्रशिक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय के सभागार में अपर मुख्य चिकित्साधिकारी की अध्यक्षता में पीएम-राहत योजना के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. प्रेम नाथ, क्षेत्राधिकारी परिवहन राज सोनकर, उप मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सुमन कुमार, प्रभारी निरीक्षक यातायात नरेन्द्र कुमार सिंह, विभिन्न थानों के उपनिरीक्षक, एनआईसी के डीआरएम मो. सैफ, चिन्हित निजी चिकित्सालयों के कम्प्यूटर ऑपरेटर तथा संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यशाला को संबोधित करते हुए अपर मुख्य चिकित्साधिकारी ने बताया कि पीएम-राहत योजना का उद्देश्य राष्ट्रीय राजमार्गों, राज्य मार्गों एवं शहरी क्षेत्रों में होने वाली सभी प्रकार की सड़क दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों को गोल्डन आवर के दौरान त्वरित एवं कैशलेस उपचार उपलब्ध कराना है, ताकि समय पर उपचार मिलने से अधिक से अधिक लोगों की जान बचाई जा सके। क्षेत्राधिकारी परिवहन राज सोनकर ने योजना की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि दुर्घटना के बाद का पहला घंटा सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसी अवधि में पीड़ित को त्वरित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सभी संबंधित विभागों के बीच समन्वय स्थापित किया जा रहा है, जिससे योजना का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक समय पर पहुंच सके। कार्यशाला के दौरान चिन्हित निजी अस्पतालों के कम्प्यूटर ऑपरेटरों को टीएमएस पोर्टल एवं ई-डार पोर्टल के संचालन का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। साथ ही आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली के अंतर्गत 112 हेल्पलाइन के माध्यम से एम्बुलेंस एवं त्वरित सहायता उपलब्ध कराने की प्रक्रिया से भी अवगत कराया गया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुए कार्यशाला का समापन किया गया। मुख्य चिकित्साधिकारी, सोनभद्र

Gem of आधुनिक समाचार 2026

नाम -- वर्तिका द्विवेदी-अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष नारी उत्थान समिति प्रयागराज

ट्रेनर-- बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान प्रयागराज,स्वयं सहायता समूह की संचालिका

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज के तुलारामबाग की वर्तिका द्विवेदी ने किया है। सन् 2021 से टीचिंग जाब को छोड़कर अपनी संस्था नारी उत्थान समिति बनाई जिसका समूह बनाकर महिलाओं को रोजगार देने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान प्रयागराज में बतौर ट्रेनर महिलाओं को ट्रेनिंग देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सजग है इसी क्रम में 100 से अधिक महिलाओं को रोजगार दे चुकी है और आगे 500 से अधिक महिलाओं को रोजगार देने का लक्ष्य है। पर्यावरण मित्र उत्पाद बनाने में एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक करने की दिशा में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य जी, नगर विकास मंत्री ए के शर्मा जी एवं पूर्व मेयर अभिलाषा गुप्ता नंदी जी के द्वारा सम्मानित किया गया।

पर्यावरण मित्र उत्पाद बनाने में एवं महिलाओं को ट्रेनिंग देकर आत्मनिर्भर बनाने में सफल प्रयास उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य करना है। समय के साथ स्वयं सहायता

आओ एक नया इंडिया बनाएं, जहां पैसा नहीं, पसीना रंग लाए

मेरे पिताजी एक बहुत ही साधारण परिवार में पैदा हुए।

बचपन में पेड़ के नीचे पंड्या जी के पास पढ़ते थे। पांचवीं कक्षा में सरकारी स्कूल में दाखिला हुआ। पढ़ाई में तेज निकले तो फिर गवर्नमेंट कॉलेज, रतलाम से बीएससी पूरी की। एमएससी की पढ़ाई के लिए वे इंदौर गए, एक छोटी-सी स्कॉलरशिप के सहारे। लेकिन होस्टल का खर्च बहुत था, पैसे कम पड़ रहे थे। इसलिए पढ़ाई छोड़कर शिक्षक बनने का सोच रहे थे। तभी उनके एक प्रोफेसर ने कहा- तुम बार्क (भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर) का एंट्रेंस एग्जाम क्यों नहीं देते? इंटरव्यू देने वे बंबई आए। आने-जाने का किराया भी मिला। एक महीने बाद जब कोई कॉल नहीं आया, तो उन्होंने सोचा- बात खत्म हो गई। तभी एक दिन उनके चचेरे भाई दौड़ते हुए होस्टल में पहुंचे और बोले, तुम्हारा सिलेक्शन हो गया। तार गया था रतलाम, लेकिन कोई समझ नहीं पाया, क्योंकि वह अंग्रेजी में था। खैर, इस तरह मेरे पिताजी की जिंदगी ने एक बिल्कुल अलग मोड़ लिया। वे अंतरिक्ष-वैज्ञानिक बने, देश-विदेश में उन्होंने नाम कमाया। यह सफर संभव हुआ एक ऐसी परीक्षा की वजह से, जिसमें कोई ऊंच-नीच, कोई भेदभाव नहीं था। बस यही मौका आज इस देश का हर युवा मांग रहा है! हम पढ़ेंगे। हम लड़ेंगे। हम मेहनत के दम पर आगे बढ़ेंगे। बस आप हमें आश्वासन दो कि यह परीक्षा खरी है। अगर दे सको तो आप बाइज्जत बरी हैं। यह हक उनका बनता है। वे इस देश की जनता हैं। जब इतना भी हम न कर पाए, तब वे सड़क पर उतर आए। उनमें अगर आक्रोश है, तो किसका दोष है? जो लोग पेपर खरीद रहे हैं, उनके भी मां-बाप हैं। उनकी औलाद से ज्यादा वो नालायक हैं। कहते हैं कि कॉम्पीटिशन बढ़ गया है, करना पड़ता है। पकड़े गए तो पैसा है, कौन डरता है? जिसने पेपर लीक किया, उसके लिए तो वो धंधा है। देखो, वह एक एंटरप्राइजिंग बंदा है। उसने देखा एक सुनहरा मौका, और मार दिया सीधा चौका। अगर हम कहते- बेटा, चीटिंग से बेहतर तुम फेल हो जाओ। डॉक्टर नहीं बन सकते, कुछ और बन जाओ। वही होता मां-बाप का फर्ज निभाना। वही होता मिट्टी का कर्ज चुकाना। इसलिए सजा होनी चाहिए कड़ी। डंका बजे शहर में यही। कसूर सिर्फ बेचने वाले का नहीं होता, खरीदने वाला भी खोटा होता है। लाखों के सपने जब चूर हुए, कुछ खुदकुशी पर मजबूर हुए, तो इन लोगों को रात में नींद आती है? क्या उनकी आत्मा नहीं पुकारती है? आज ही सुना, कुछ लोग दूध में केमिकल मिला रहे हैं। क्या वे चैन की रोटी खा रहे हैं? खैर, करोड़ों के पुल सिर्फ चालीस दिन बाद गिर जाते हैं। वो इसलिए कि आप सीमेंट में धूल मिलाते हैं। नेता लोग बहुत कुछ कहते हैं, लेकिन देखो उनके बच्चे कहां रहते हैं। खैर, इस देश में जिसे रहना है, उसका बस इतना कहना है- परीक्षा विद्यार्थी के लिए एक जंग है। हार-जीत तो होगी, जीवन का अंग है। लेकिन जब योद्धा को छल-कपट से हराया जाता है, उसका आक्रोश पूरे समाज पर छा जाता है। पढ़ो-लिखो, कुछ बनो- हम कहते हैं। बच्चे सुबह चार बजे उठ बैठते हैं। दिलो-जान लगाकर खूब पढ़ते हैं। मोबाइल एयरप्लेन मोड पर रखते हैं। मां-बाप केबल टीवी कटवा देते हैं। दोस्त आ गया, तो उसे डांट देते हैं। एक ही साल की तो बात है। सफल हो गए, तो ठाठ है। इस आशा की पटरी पर देश की गाड़ी चल रही है। मेहनत के ईंधन पर आग जल रही है। जब यह गाड़ी पटरी से उतर गई, समझो लोगों की आस मर गई। किसी एक की नौकरी का सवाल नहीं है। किसी एक के भविष्य का बवाल नहीं है। हमारा देश जिस नींव पर टिका हुआ है, आज लगता है सब बिका हुआ है। देश की सबसे बड़ी पूंजी नौजवान हैं। उनके सपने और अरमान हैं। अगर उनका भरोसा टूट गया, समझो देश अंदर से फूट गया। आओ एक नया इंडिया बनाएं, जहां पैसा नहीं, पसीना रंग लाए। हम पढ़ेंगे।

हम लड़ेंगे। मेहनत के दम पर बढ़ेंगे। आप हमें आश्वासन दो कि यह परीक्षा खरी है। दे सको तो आप बाइज्जत बरी हैं। यह हक उनका बनता है। वे इस देश की जनता हैं। जब इतना भी न कर पाए, तब वे सड़क पर उतर आए। उनमें अगर आक्रोश है, तो किसका दोष है? (ये लेखिका के अपने विचार हैं,रश्मि बंसल)

लोगों का जीवन सुधारने के लिए अमीर बनने का इंतजार जरूरी नहीं

कई वर्षों बाद पिछले महीने केरल जाना मेरे लिए सुखद अनुभव रहा। 1980 के दशक में जब मैं पीएचडी कर रहा था तो केरल अपने बेहतरीन सामाजिक संकेतकों के लिए जाना जाने लगा

था। मसलन, 1981 की जनगणना के समय केरल में 71फीसदी वयस्क महिलाएं साक्षर थीं, जबकि पूरे भारत में सिर्फ 26फीसदी थीं। शिशु मृत्यु दर 1,000 जन्मों पर 37 थी, जबकि भारत में यह 110 थी। ये उपलब्धियां तब थीं, जब केरल देश के सबसे गरीब राज्यों में से एक था। इससे पता चलता है कि गरीब देशों को लोगों का जीवन सुधारने के लिए अमीर बनने का इंतजार करने की जरूरत नहीं।

विकास के शुरुआती दौर में भी सरकार और समाज ऐसे कदम उठा सकते हैं, जिनसे हर व्यक्ति की बुनियादी जरूरतें पूरी हों। सभी को अच्छी शिक्षा देना इसका उदाहरण है, जो 'केरल मॉडल' का आधार है। याद रखें, पुराने दिनों में केरल का सामाजिक ढांचा बेहद दमनकारी था। जब स्वामी विवेकानंद 19वीं सदी के अंत में केरल गए तो जाति-भेद की कठोरता देखकर विचलित हुए थे।वंचित जातियों को शिक्षा के अधिकार के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा है 1980 के दशक में जब केरल दुनिया में चर्चित होने लगा, तब कुछ विद्वानों ने चेतावनी दी कि केरल मॉडल टिकाऊ नहीं है। आर्थिक निवेश के बजाय सामाजिक विकास को प्राथमिकता देने की केरल को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। लेकिन इन भविष्यवाणियों के विपरीत, केरल में सामाजिक संकेतक बेहतर होते रहे और लोगों की आय भी तेजी से बढ़ी। इसका कारण था कि राज्य की अर्थव्यवस्था बढ़ने लगी थी और बहुत से केरलवासी दुबई, सऊदी अरब और अन्य खाड़ी देशों में काम करने लगे। राज्य के अंदर और बाहर, दोनों ही जगह केरल ने अपने मानव संसाधन विकास का फायदा उठाया।कई मायनों में आज केरल का जीवन-स्तर तथाकथित विकसित देशों के बराबर है। उदाहरण के लिए, शिशु मृत्यु दर अब 1,000 जीवित जन्मों पर सिर्फ 5 है, जो अमेरिका से थोड़ी ही कम है। पूरे भारत में यह लगभग 25 है। इसी तरह, केरल में अधिकतर बच्चों को तीन साल की उम्र से ही प्री-स्कूल शिक्षा मिल जाती है, जबकि अमेरिका में यह सुविधा मुश्किल से आधे बच्चों को मिलती है। केरल कई क्षेत्रों में देश से भी आगे निकल गया है। देश की सबसे मजबूत और सक्रिय ग्राम पंचायत, स्वयं-सहायता समूह और सहकारी संस्थाएं केरल में हैं। इनमें यूएलसीएसएस नामक एक सहकारी निर्माण कंपनी भी शामिल है, जहां 18,000 मजदूर बिना किसी मालिक के काम करते हैं। केरल में प्रवासी मजदूरों और निराश्रित परिवारों के लिए प्रगतिशील नीतियां भी हैं। 2018 की भयानक बाढ़ और कोविड संकट में भी केरल ने सामाजिक एकजुटता की मिसाल पेश की थी।पिछले महीने केरल जाने पर मैंने एक और गुण देखा- जिम्मेदार नागरिकता की भावना। सुविधाघरों समेत सार्वजनिक जगहें बहुत साफ-सुथरी थीं।गाड़ियां जेब्रा क्रॉसिंग पर रुकती हैं। लोग लाइन में खड़े होते हैं। कूड़ेदान का सही उपयोग होता है।और यह सब बिना किसी जोर-जबरदस्ती के होता है, क्योंकि समाज में सार्वजनिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हो चुकी है। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि केरल हर तरह से आदर्श है।वहां भी कई समस्याएं हैं, जैसे आत्महत्या की ऊंची दर और शिक्षित बेरोजगारी। लेकिन जब भारत 2047 तक विकसित बनने की कोशिश कर रहा है, तो उसे केरल से सीख लेनी चाहिए।(ज्यां द्रेज)

ो छेड़ेंगे तो वह अपना
ही आपको सौंपेगी

'अनफिल्ड टाइम' का इस्तेमाल करें, तो क्रिएटिविटी बाहर आएगी

परिवार की एक शादी में शामिल होने बुधवार रात जब मैं बेंगलुरु जा रहा था तो मैंने तय किया कि इस बार लैपटॉप साथ नहीं ले जाऊंगा। मुझे सिर्फ मैरिज हॉल में उसकी सुरक्षा की चिंता ही नहीं सता रही थी, बल्कि रिश्तेदार मुझे 'स्क्रीन मैन' कहने लगे थे तो मैंने डिजिटल उपवास की योजना भी बनाई थी। वैसे भी मैं मोबाइल फोन की छोटी-सी स्क्रीन से चिपका रहने वाला व्यक्ति नहीं हूं। इसलिए मैं लगातार आसपास के माहौल को देखता हुआ इस कॉलम के लिए मेंटल नोटिंग करता रहा। फिर यही कॉलम मैंने मोबाइल पर लिखा। मेरे एक रिश्तेदार की पहली प्रतिक्रिया थी कि 'घंटों तक आसपास देखते हुए आप बोर नहीं होते?' मैंने कहा, 'बिल्कुल नहीं।' इस सवाल-जवाब ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि मैं तो जानबूझकर अपने लिए बोरियत पैदा करने की कोशिश कर रहा हूं, फिर भी इस एक हवाई सफर में मेरे दिमाग में कई आइडिया कैसे आ गए? पूरे रास्ते लोगों को देखते हुए मैं सोचता रहा कि वे कैसे व्यवहार करते हैं, क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं, कैसे और क्या बात करते हैं और उनकी बॉडी लैंग्वेज कैसी है। यह सब देख रही मेरी आंखों से दिमाग कई सवाल पूछ रहा था। आखिरकार वही सवाल अगले कुछ दिनों के लिए मजबूत स्टोरी आइडिया बन गए। जैसे ही उन विचारों को मैंने अपनी डायरी में लिखा मेरा तनाव और एंग्जायटी खत्म हो गए कि भीड़भाड़ वाली शादी में मैं अगला आर्टिकल कैसे लिख पाऊंगा। कनाडा की यूनिवर्सिटी ऑफ वाटरलू में कॉग्निटिव न्यूरोसाइंस के प्रोफेसर डॉ. जेम्स डैनकर्ट कहते हैं कि 'जब कोई व्यक्ति तनाव भरी स्थिति से अलग होकर खुद को सोचने के लिए स्पेस देता है तो एक नया आइडिया जन्म लेता है। डॉ. जेम्स के इस दावे को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई फिल्म 'इक्का' में भी देखा जा सकता है। एक सीन में पब्लिक प्रॉसिक्यूटर का किरदार निभा रहीं तिलोत्तमा शोम को रोजमर्रा की एक घटना देखकर फॉरेंसिक से जुड़ी एक अहम बात समझ आ जाती है। एक चाय-पान की दुकान में बैठे हुए उनका दिमाग तो खाली होता है, लेकिन नजरें बर्तन धो रहे दुकानदार पर होती हैं। वह ब्रश या कपड़े की बजाय अपनी उंगली गिलास के अंदर तक डालता है और इसे अंदरूनी सतह पर घुमाकर गंदगी बाहर निकालता है। यही उनके लिए 'यूरेका' मोमेंट होता है। वह इस मोशन को उस सबूत के साथ कनेक्ट करती हैं, जिसे जांचकर्ता नजरअंदाज कर चुके थे। वह विजुअलाइज करती हैं कि अगर हत्या में कार की चाबी इस्तेमाल की गई थी तो उसी चाबी से कार स्टार्ट भी की गई होगी। यानी, की-होल के छोटे चैम्बर में खून के निशान होंगे, जिन्हें सिर्फ ऊपर से साफ करके नहीं हटाया जा सकता,

टूरिज्म ऐसा हो, जो पर्यावरण व संस्कृति को क्षति ना पहुंचाए

मैं लगातार केरल के बारे में सोचती रही हूं। दक्षिण भारत की उस समृद्ध भूमि की मनमोहक सुंदरता में मैं जैसे रम-सी गई थी।

गेंदे के चमकीले पीले फूलों के खेतों के बीच साइकिल चलाना, धुंध से ढके वेस्टर्न घाट में पैदल चलना, केले के पत्ते पर परोसे स्वादिष्ट और शाकाहारी भोजन का स्वाद लेना और यात्रा के दौरान मिले लोगों से दयालुता, विनम्रता, उद्यमशीलता और मानवीय संवेदनाओं की अनगिनत कहानियां सुनना- ये सब अनुभव मेरी स्मृति में तरोताजा हैं।केरल की यात्रा के बाद ही मैं इस नतीजे पर पहुंची थी कि रिस्पॉन्सिबल-टूरिज्म अब पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा। केरल रिस्पॉन्सिबल-टूरिज्म मिशन शुरू करने वाला भारत का पहला राज्य था। इसका स्पष्ट उद्देश्य था- पर्यटकों के लिए घूमने की बेहतर जगहों और स्थानीय लोगों के जीवनयापन के लिए बेहतर स्थानों का विकास करना। टूरिज्म प्रोजेक्ट्स का ध्यान अमूमन पहले उद्देश्य पर केंद्रित रहता है- पर्यटकों के लिए बुनियादी ढांचा तैयार करना। इसी सोच का परिणाम है कि जंगलों के बीच से सड़कें बनाई जाती हैं और पहाड़ों पर बसे पर्यटन स्थलों पर कंक्रीट का बोझ बढ़ता जाता है। कई बार अधिकारी पर्यटकों की मांगें पूरी करने को ही अपनी प्राथमिकता बना लेते हैं, चाहे उससे स्थानीय पर्यावरण या संस्कृति को कितना ही नुकसान क्यों न पहुंचे। लद्दाख के शुष्क पर्वतीय मरुस्थल में सदियों पुराने सूखे कम्पोस्ट टॉयलेट्स की जगह फ्लश टॉयलेट्स को बढ़ावा दिया जाता है। पूरे देश में ही ऐसी प्रवृत्तियों के कारण पर्यटन, स्थानीय जीवन को बेहतर बनाने के बजाय कई बार उसके लिए बाधा बन जाता है। लेकिन केरल की यात्रा के दौरान मुझे इस विचार का दूसरा पक्ष भी समझ में आया। मेरी मुलाकात कई छोटे उद्यमियों और महिला स्वयं-सहायता समूहों से हुई, जिन्हें केरल के रिस्पॉन्सिबल-टूरिज्म मिशन ने अपने अनेक कार्यक्रमों के तहत व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण दिया था। इन गतिविधियों में पापड़म बनाना, रीसाइकल्ड मोमबत्तियां तैयार करना और प्लास्टिक थैलों के विकल्प के रूप में कपड़े के बैग सिलना जैसी पहलें शामिल थीं। भारत के कई राज्यों में व्यावसायिक प्रशिक्षण तो दिया जाता है, लेकिन रोजगार के अवसरों के अभाव में ऐसे कार्यक्रम अकसर सफल नहीं हो पाते। केरल की सफलता का आधार इन कौशलों को पर्यटन से जोड़ना था। उद्यमियों को होटलों, रिसॉर्टों और होमस्टे से जोड़कर ऐसे संबंध स्थापित किए गए, जिन्होंने उनकी आजीविका को स्थायित्व प्रदान किया। जिन उद्यमियों से मेरी मुलाकात हुई, उनमें से अनेक अपने कारोबार का विस्तार करने और जीवन-स्तर में सुधार लाने में सफल रहे हैं। वहीं रिस्पॉन्सिबल-टूरिज्म से जुड़ी रहने की जगहों को स्थानीय स्तर पर तैयार करने के लिए इको-कॉन्शस उत्पादों की नियमित आपूर्ति मिलने लगी है। इससे ऐसा मॉडल विकसित हुआ है, जो पर्यटकों के लिए बेहतर डेस्टिनेशन और स्थानीय लोगों के लिए बेहतर जीवन-स्थल तैयार करता है। केरल में नीला नदी के किनारे यात्रा करते समय हमने कई ऐसे शिल्पकारों के साथ समय बिताया, जो अकेले अपने पारम्परिक शिल्प को जीवित रखे हुए हैं। हमने उनके जीवन के बारे में जाना, उनसे अनेक जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछे और उनके काम का दस्तावेजीकरण किया। उनके शिल्प और परम्परा को समझने का अनुभव अपने आप में अत्यंत मूल्यवान था। मध्य केरल में स्थित थेक्कडी के पेरियार टाइगर रिजर्व में मुझे वन विभाग की एक दूरदर्शी पहल के बारे में जानकर और भी प्रेरणा मिली। मन्नान जनजाति सदियों तक इस जंगल में बाघों, तेंदुओं और अन्य वन्यजीवों के साथ रहती आई थी। वे मुख्यतः जंगल से मिलने वाले संसाधनों पर ही निर्भर रहते थे। जब उन्हें जंगल के बफर क्षेत्र में बसाया गया, तो उनकी आजीविका के अवसर बहुत कम हो गए। इसके बाद सामुदायिक पर्यटन की पहल शुरू की गई, जिसका उद्देश्य उनके लिए वैकल्पिक आजीविका के साधन विकसित करना था। चूंकि वे जन्म से ही इन जंगलों से परिचित थे, इसलिए उन्हें बुनियादी पर्यटन प्रशिक्षण देकर गाइड्स, बांस राफ्टिंग दल के सदस्य और शिकार-रोधी दस्तों का हिस्सा बनने के लिए तैयार किया गया। स्थानीय समुदायों के पारम्परिक ज्ञान का उपयोग वन्यजीव संरक्षण को मजबूत करने, आजीविका के अवसर पैदा करने और यात्रियों को गाइडेड वॉक्स और ट्रेक्स के जरिये जंगल को अधिक गहराई से समझने का अवसर देने में मददगार साबित हुआ है। यह एक ऐसा मॉडल है, जिसे भारत के अन्य जनजातीय क्षेत्रों में भी अपनाया जाना चाहिए। जंगलों के बीच से सड़कें बनाई जाती हैं और पहाड़ों पर बसे पर्यटन स्थलों पर कंक्रीट का बोझ बढ़ता जाता है। कई बार अधिकारी पर्यटकों की मांगें पूरी करने को ही अपनी प्राथमिकता बना लेते हैं, चाहे उससे स्थानीय पर्यावरण या संस्कृति को कितना ही नुकसान क्यों न पहुंचे। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,शिव्या नाथ)

विज्ञान की थोड़ी-बहुत समझ स्वस्थ व लंबा जीवन जीने में मदद करती है

मुंबई की खूबसूरती यही है कि वहां गगनचुम्बी हाई-राइज इमारतों के साथ झोपड़ियां और एक मंजिला 'चॉल' भी दिखाई देंगी। इसकी वजह यह है कि हाई-राइज में रहने वाले अमीरों की सेवा करने वाली आबादी अपने काम-

काज की जगह के करीब ही रहना चाहती है, चाहे वह जगह कितनी ही तंग क्यों न हो।हाल ही में मुंबई में पवई लेक के आसपास आई बाढ़ के दौरान मैं कार में बैठा था तो मेरे पास अगल-बगल बसे इन दो विरोधाभासों को देखने के अलावा कोई काम नहीं था। मैंने एक अंतर देखा। लोअर मिडल क्लास और सपोर्टिंग स्टाफ के इन ज्यादातर घरों की खिड़कियों में एयर कंडीशनर लगे थे या बाहरी दीवार पर जाल में बंद स्प्लिट एसी यूनिट लगी थीं। ऐसे ही एक घर से निकला बाइक सवार मेरी कार विन्डो के बिल्कुल पास आकर खड़ा हो गया, ताकि कार एक इंच भी सरके तो वह ट्रैफिक में घुस सके। मैंने मौका देखकर उसकी तारीफ की कि इतनी छोटी जगह में भी उसने सभी सुविधाएं जुटा रखी हैं। उसने कहा 'आजकल सबकुछ ईएमआई पर उपलब्ध है।' उसके जवाब से मुझे 2010 में भास्कर समूह के लिए किए गए हमारे सर्वे की याद आ गई। उस समय सबसे ज्यादा बिकने वाली तीन चीजें स्मार्टफोन, दुपहिया वाहन और एयर कंडीशनर थीं। और जब मैंने 2026 के सेंट्रल बैंक डेटा देखे तो ये तीनों अब भी उसी स्थान पर थीं। चूंकि गाड़ी कई मिनट तक नहीं चली तो मैंने उससे पूछा कि जीवन कैसा चल रहा है। उसने कहा कि हालांकि उसने घरवालों को सारी सुविधाएं दे रखी हैं, लेकिन बुजुर्ग हो रहे पैरेन्ट्स की बढ़ती स्वास्थ्य समस्याएं उसे चिंतित करती हैं। तभी मुझे याद आया कि मैंने पढ़ा था कि कुछ आदतें, जिन्हें हम महसूस तक नहीं करते, हमारी बायोलॉजिकल एज को बढ़ाती हैं और स्किन को बेहतर रखती हैं। एक रिसर्च के बाद यूके की पत्रिका 'साइंस एडवांसेस' और 'जर्नल ऑफ एजिंग' में प्रकाशित हालिया रिपोर्ट में कहा गया कि सुबह के वक्त पर्याप्त धूप लेना स्किन डैमेज, पसीने बहाने के तरीके और लंबी उम्र पर असरकारक है। इसी तरह लोग यह नहीं समझते कि सिर्फ 100 ग्राम योगर्ट भी गट-हेल्थ के लिए अच्छा होता है, जो स्वस्थ और लंबी उम्र में योगदान देता है। योगर्ट एजिंग स्पीड को 2.2इ तक कम करता है। मुझे यह आंकड़ा इसलिए याद रहा क्योंकि मैं दक्षिण भारतीय हूं और हमारा भोजन कर्ड-राइस के बिना पूरा नहीं होता। उस रिपोर्ट ने मुझे खुश कर दिया, क्योंकि कर्ड-राइस हमेशा से मेरी फेवरेट डिश रही है। लेकिन जिस एक चीज ने मेरा ध्यान खींचा, वह दोस्तों की क्वालिटी को लेकर एक स्पेशल रिपोर्ट थी। उसमें कहा गया कि आम तौर पर दोस्ती बायोलॉजिकल एजिंग पर सकारात्मक असर डालती है। इससे कॉग्निटिव डिक्लाइन का जोखिम कम होने और अवसाद में कमी जैसे कई फायदे मिलते हैं। अमेरिका के 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजिंग' ने चेतावनी दी कि सोशल नेटवर्क में 'झगड़ालू' लोगों के साथ अधिक समय बिताना तनाव और बायोलॉजिकल एजिंग से जुड़े बायोमार्कर को बढ़ाता है। रिपोर्ट में कहा गया कि 'किसी व्यक्ति के जीवन में ऐसे चुनौतीपूर्ण रिश्ते जितने ज्यादा होंगे, परिणाम उतने ही खराब हो सकते हैं।

' फंडा यह है कि हर लाइफस्टाइल के पीछे एक विज्ञान होता है- बिस्तर से उठने के तरीके से लेकर प्रियजनों के साथ शाम बिताने तक। यदि हम हर गतिविधि के पीछे का विज्ञान समझ लें तो जीवन को स्वस्थ और लंबा बनाने की संभावना काफी बढ़ जाती है। एन. रघुरामन

चीन-रूस जंग में आए तो अंजाम बुरा होगाःपुतिन-जिनपिंग ने मुझे यकीन दिलाया, वे ईरान को हथियार नहीं देंगे-ट्रम्प

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। सऊदी में संभावित खतरे को लेकर चेतावनी जारी- सऊदी अरब के यनबू गवर्नरेट में राष्ट्रीय प्रारंभिक

चेतावनी प्रणाली की ओर से संभावित खतरे को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। सिविल डिफेंस विभाग ने लोगों से शांत रहने और अधिकारियों की ओर से जारी निर्देशों का पालन करने की अपील की है। ट्रम्प बोले- ईरान से बातचीत जारी, लेकिन परमाणु हथियार नहीं बनाने देंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान और अमेरिका के बीच बातचीत जारी है। अगर ईरान बात करना चाहता है तो वह सुनने के लिए तैयार हैं, लेकिन उसे परमाणु हथियार रखने की इजाजत नहीं दी जाएगी। वॉशिंगटन में एक कार्यक्रम में ट्रम्प ने दावा किया कि अमेरिकी सैन्य कार्रवाई से ईरान की सैन्य ताकत को भारी नुकसान पहुंचा है। उन्होंने कहा, 'हमने ईरान पर बहुत जोरदार हमला किया है। ईरान के पास अब रडार नहीं हैं। उसके पास बहुत कम ड्रोन बचे हैं। कभी-कभी वे कुछ हमले करते दिखाई देते हैं, लेकिन उनके पास अब ज्यादा क्षमता नहीं बची है।' चीन ने ईरान की संप्रभुता और सुरक्षा के समर्थन का भरोसा दिया-चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची से मुलाकात में कहा कि बीजिंग, ईरान की संप्रभुता, सुरक्षा और राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा के उसके प्रयासों का समर्थन करता है। चीन के विदेश मंत्रालय के बयान के मुताबिक, वांग यी ने पश्चिम एशिया में हाल के दिनों में बढ़े तनाव पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि एमओयू समझौते को नहीं छोड़ा जाना चाहिए था। बातचीत जारी रहनी चाहिए और समझौते के तहत बनी सहमति पर लौटना सबसे जरूरी काम है। वहीं, अब्बास अराघची ने कहा कि ईरान की बातचीत करने की इच्छा कभी नहीं बदली और तेहरान इस संघर्ष को आगे नहीं बढ़ाना चाहता। उन्होंने कहा कि इस महत्वपूर्ण समय में ईरान और चीन को आपसी संपर्क और समन्वय बढ़ाना चाहिए। साथ ही उम्मीद जताई कि चीन तनाव कम करने और हालात सामान्य बनाने में आगे भी अहम भूमिका निभाएगा। बहरीन में अमेरिकी नौसैनिक ठिकाने पर ईरानी हमला-ईरानी मीडिया इरना के मुताबिक, बहरीन में अमेरिकी फिफ्थ फ्लीट के नौसैनिक ठिकाने पर जोरदार धमाके हुए हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इस ठिकाने पर ड्रोन और मिसाइलों से हमला किया गया, जिसके बाद कई बड़े विस्फोट हुए। हालांकि, अभी तक अमेरिका या बहरीन की ओर से इस हमले और इससे हुए नुकसान की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। ईरान बोला- होर्मुज में असुरक्षा के लिए अमेरिका जिम्मेदार ईरान की सरकारी न्यूज एजेंसी इरना के मुताबिक, विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि होर्मुज स्ट्रेट और पूरे क्षेत्र में जो असुरक्षा पैदा हुई है, उसकी पूरी जिम्मेदारी अमेरिका पर है। उन्होंने अमेरिका पर समझौता तोड़ने का आरोप लगाया। अराघची ने कहा कि अमेरिका ने ईरान के अहम बुनियादी ढांचे पर क्रूर हमले किए हैं और यह युद्ध अपराध हैं। ईरान अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

उन्होंने सभी देशों से अंतरराष्ट्रीय संबंधों में ताकत के इस्तेमाल को सामान्य मानने का विरोध करने की अपील भी की।

बांग्लादेश के राष्ट्रपति ने इस्तीफा दिया, बताया- बीमार हूं, कई बार बेहोश हो जाता हूं

ढाका। इसके बाद शहाबुद्दीन ही अवामी लीग सरकार के दौर के एकमात्र संवैधानिक पदाधिकारी

थे, जो 2 साल बाद भी पद पर बने हुए थे। लंदन दौरे पर शेख हसीना से बातचीत का आरोप- वह 9 मई को इलाज के लिए लंदन गए थे और 18 मई को ढाका लौटे थे। बांग्लादेशी समाचार पत्रों की रिपोर्टों में सूत्रों के हवाले से बताया गया था कि इस यात्रा के दौरान राष्ट्रपति ने भारत में रह रहीं पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना से फोन पर बातचीत की थी। जैसे ही इस बातचीत की भनक बीएनपी (बीएनपी) के शीर्ष नेतृत्व को लगी, उन्होंने इसे बहुत गंभीरता से लिया। इसके बाद राष्ट्रपति तक यह मैसेज पहुंचाया कि शेख हसीना से संपर्क साधना या बातचीत करना मौजूदा राजनीतिक माहौल में स्वीकार्य नहीं है और उन्हें अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। अखबार प्रोथोम आलो ने भी सरकार के एक सीनियर अधिकारी के हवाले से बताया कि सरकार इस बात से नाराज है कि राष्ट्रपति ने हाल ही में शेख हसीना से दोबारा संपर्क करने की कोशिश की थी। 'शेख हसीना के ऐलान की वजह से कुर्सी गई'-शहाबुद्दीन का इस्तीफा ऐसे समय आया है, जब पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कुछ दिन पहले रॉयटर्स से कहा था कि वह भारत में निर्वासन खत्म कर बांग्लादेश लौटेंगी और अदालत में चल रही कानूनी कार्रवाई का सामना करेंगी। शेख हसीना के इस ऐलान के बाद सत्तारूढ़ बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के नेताओं ने राष्ट्रपति शहाबुद्दीन पर पद छोड़ने का दबाव बढ़ा दिया। द डेली स्टार ने बीएनपी के एक सीनियर नेता के हवाले से बताया कि शेख हसीना के ऐलान के बाद देश का राजनीतिक माहौल और ज्यादा संवेदनशील हो गया। अगर शेख हसीना की वापसी के दौरान राष्ट्रपति अपने पद पर बने रहते तो वे उनके फायदे के लिए कदम उठा सकते थे और किसी फैसले को प्रभावित करने की कोशिश कर सकते थे। अगर कोई संवैधानिक विवाद पैदा होता, तो वह उसे संभालने में भूमिका निभा सकते थे। यही वजह रही कि उन पर इस्तीफे का दबाव ज्यादा बढ़ गया। अब स्पीकर राष्ट्रपति की जिम्मेदारी निभाएंगे-बांग्लादेश के संविधान के अनुच्छेद 54 के मुताबिक, नए राष्ट्रपति के चुने जाने तक संसद के स्पीकर हाफिज उद्दीन अहमद कार्यवाहक राष्ट्रपति की जिम्मेदारी संभालेंगे। इसके बाद संसद को 90 दिनों के भीतर नया राष्ट्रपति चुनना होगा, जो मौजूदा कार्यकाल का बाकी समय पूरा करेगा। मोहम्मद शहाबुद्दीन का कार्यकाल अप्रैल 2028 तक चलना था। इलाज के लिए बैंकॉक गए थे, दो दिन पहले लौटे-स्पीकर हाफिज उद्दीन अहमद 19 जुलाई को इलाज के लिए थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक गए थे। उनकी वापसी रविवार को तय थी, लेकिन उन्होंने अपना दौरा बीच में ही खत्म कर दो दिन पहले ढाका लौटने का फैसला किया। ढाका हवाई अड्डे पर पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा था कि विदेश में होने के कारण उन्हें राष्ट्रपति के इस्तीफे के फैसले की जानकारी नहीं थी।

सऊदी से परमाणु समझौता करने के बाद 24 घंटे में ही पलटे ट्रम्प, जोड़ी नई शर्त, बोले- इजराइल से रिश्ते सुधारे सऊदी-न्यूक्लियर डील अटकी

वॉशिंगटन डीसी। यूएई, बहरीन, मोरक्को और सूडान इसके तहत इजराइल से जुड़ चुके हैं।

अब अमेरिका चाहता है कि सऊदी अरब भी इसी समझौते का हिस्सा बने। ट्रम्प का मानना है कि अगर सऊदी इजराइल से रिश्ते सामान्य करता है, तो पश्चिम एशिया में अमेरिका का रणनीतिक गठजोड़ और मजबूत होगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि बाइडेन प्रशासन भी सऊदी परमाणु समझौते को इजराइल से रिश्ते सामान्य करने से जोड़कर आगे बढ़ा रहा था। हालांकि 7 अक्टूबर 2023 के हमास हमले और गाजा युद्ध के बाद यह प्रक्रिया रुक गई। सऊदी का कहना है कि फिलिस्तीन के लिए अलग राज्य का रास्ता साफ हुए बिना वह इजराइल से आधिकारिक रिश्ते नहीं बनाएगा। यही वजह है कि अब न्यूक्लियर डील भी इस शर्त पर अटक गई है। तेल के बावजूद सऊदी को परमाणु ऊर्जा की जरूरत क्यों? सवाल यह है कि दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादकों में शामिल सऊदी अरब के पास तेल की कोई कमी नहीं है, तो उसे परमाणु ऊर्जा की जरूरत क्यों पड़ रही है। इसकी वजह है विजन-2030। इसके तहत सऊदी अपनी अर्थव्यवस्था और ऊर्जा व्यवस्था को सिर्फ तेल पर निर्भर नहीं रखना चाहता। दरअसल, देश में बिजली की मांग लगातार बढ़ रही है और अभी इसका बड़ा हिस्सा तेल व गैस से पूरा किया जाता है। अगर बिजली परमाणु ऊर्जा से बनने लगेगी, तो तेल और गैस की खपत घटेगी। इससे सऊदी ज्यादा तेल निर्यात कर सकेगा और उसकी कमाई भी बढ़ेगी। इसके साथ ही सऊदी सौर, पवन और परमाणु ऊर्जा का इस्तेमाल बढ़ाकर अपनी ऊर्जा व्यवस्था को भविष्य के लिए ज्यादा मजबूत और संतुलित बनाना चाहता है। इसी रणनीति के तहत वह लंबे समय से अमेरिका समेत दूसरे देशों के साथ असैन्य परमाणु सहयोग की कोशिश कर रहा है। ट्रम्प ने यूरेनियम एनरिचमेंट पर इनकार क्यों किया- परमाणु बिजलीघर चलाने के लिए यूरेनियम को एक खास स्तर तक एनरिच (संवर्धित) किया जाता है। लेकिन यही तकनीक अगर बहुत अधिक स्तर तक पहुंच जाए, तो उसी यूरेनियम का इस्तेमाल परमाणु हथियार बनाने में भी किया जा सकता है। इसलिए यूरेनियम एनरिचमेंट को दुनिया की सबसे संवेदनशील परमाणु तकनीकों में माना जाता है। यही वजह है कि अमेरिका आमतौर पर किसी भी देश को अपनी जमीन पर यूरेनियम एनरिचमेंट की अनुमति देने से बचता है। उसे आशंका रहती है कि भविष्य में इस तकनीक का इस्तेमाल सैन्य कार्यक्रम के लिए भी हो सकता है। सऊदी अरब को लेकर भी यही चिंता है, इसलिए ट्रम्प ने साफ कर दिया कि न्यूक्लियर डील होगी, लेकिन यूरेनियम एनरिचमेंट की इजाजत नहीं मिलेगी।

जापान में राजा अब दूर के रिश्तेदारों को गोद लेंगे, सिर्फ 3 उत्तराधिकारी बचे तो नियम बदला

महिला को सम्राट बनने का अधिकार नहीं मिला

टोक्यो।इन नेताओं का तर्क है कि जापान का शाही परिवार करीब

2,000 वर्षों से पुरुष वंश के आधार पर चला आ रहा है। उनके अनुसार, अगर किसी महिला को सम्राट बनाया गया और उसके बच्चे भविष्य में सिंहासन पर बैठे, तो शाही परिवार की पितृवंश परंपरा टूट जाएगी। उनका मानना है कि यही परंपरा जापान की राजशाही की पहचान है और इसे नहीं बदला जाना चाहिए। इसी वजह से सरकार ने महिला सम्राट या महिलाओं की संतान को उत्तराधिकारी बनाने का कानून बदलने के बजाय दूसरा रास्ता चुना। 11 पूर्व शाही शाखाएं क्या हैं, जिनके बच्चे गोद लिए जाएंगे सम्राट को उत्तराधिकारी चुनने के लिए गोद लेने का अधिकार मिला है। लेकिन वे किसी भी बच्चे को गोद नहीं ले सकते। वे केवल 11 पूर्व शाही शाखाओं के वंशज के पुरुषों को ही गोद ले सकेंगे। दरअसल, दूसरे विश्व युद्ध से पहले जापान के शाही परिवार में सिर्फ मुख्य राजपरिवार ही नहीं था, बल्कि उससे जुड़ी 11 अलग-अलग शाही शाखाएं भी थीं। इन शाखाओं के सदस्य भी सम्राट के पुरुष वंशज थे और जरूरत पड़ने पर सिंहासन के उत्तराधिकारी बन सकते थे। साल 1947 में, दूसरे विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी कब्जे वाली प्रशासनिक व्यवस्था और जापानी सरकार ने शाही परिवार का आकार छोटा करने का फैसला किया। इसके तहत इन 11 शाखाओं के 51 सदस्यों से शाही दर्जा वापस ले लिया गया। वे आम नागरिक बन गए और उनके परिवारों का शाही परिवार से कानूनी रिश्ता खत्म हो गया। नियम बदलने के बाद शाही परिवार में पुरुष सदस्यों की संख्या लगातार घटती गई। दूसरी ओर, शाही परिवार की महिलाएं जब आम नागरिकों से शादी करती थीं, तो कानून के मुताबिक उन्हें भी शाही परिवार छोड़ना पड़ता था। इससे शाही परिवार छोटा होता चला गया और उत्तराधिकार का संकट गहराने लगा।इसी वजह से जापानी सरकार ने करीब 79 साल बाद नियमों में बदलाव किया है। अब इन 11 पूर्व शाही शाखाओं के 15 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पुरुष वंशजों को कानूनी प्रक्रिया के जरिए गोद लेकर फिर से शाही परिवार में शामिल किया जा सकेगा। महिलाओं का आम नागरिक से शादी करने पर शाही दर्जा नहीं छिनेगा- नए कानून के तहत अब शाही परिवार की महिला सदस्य अगर किसी आम नागरिक से शादी करती हैं, तब भी वे अपना शाही दर्जा और आधिकारिक जिम्मेदारियां नहीं खोएंगी। यह पहले के नियम से बिल्कुल अलग है। पुराने कानून के तहत आम नागरिक से शादी करने वाली महिला को शाही परिवार छोड़ना पड़ता था। नए कानून के पीछे सबसे बड़ा कारण राजकुमारी माको का मामला माना जा रहा है। सम्राट नारुहितो की भतीजी माको ने 2021 में अपने कॉलेज के साथी केई कोमुरो से शादी की थी। दोनों की मुलाकात 2013 में टोक्यो की इंटरनेशनल क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी में हुई थी। दोनों ने गुपचुप सगाई कर ली थी, जिसके बाद पूरे जापान में इस रिश्ते को लेकर काफी विवाद हुआ। अक्टूबर 2021 में दोनों की शादी बेहद सादगी से हुई। परंपरा के मुताबिक होने वाला जुलूस और भव्य समारोह भी नहीं हुआ। शादी के बाद कानून के तहत माको को अपना शाही दर्जा छोड़ना पड़ा और वे अपने पति के साथ न्यूयॉर्क चली

गईं, जहां उनके पति वकील हैं। माको ने शाही परिवार छोड़ने पर मिलने वाली करीब 10 लाख पाउंड (करीब 11 करोड़ रुपए) की सरकारी राशि भी लेने से इनकार कर दिया था। दूसरे विश्व युद्ध के बाद ऐसा करने वाली वे शाही परिवार की पहली सदस्य थीं। जापान की सम्राट बन चुकी हैं 8 महिलाएं-जापान के इतिहास में अब तक 8 महिलाएं सम्राट (महारानी) बन चुकी हैं। हालांकि, इनमें से कोई भी अपने बच्चों को उत्तराधिकारी नहीं बना सकी। वे केवल तब सिंहासन पर बैठीं, जब कोई उपयुक्त पुरुष उत्तराधिकारी उपलब्ध नहीं था या वह बहुत छोटा था। इसलिए उन्हें अक्सर अस्थायी शासक माना गया और बाद में सत्ता फिर किसी पुरुष उत्तराधिकारी को सौंप दी गई। जापान की आखिरी महिला शासक महारानी गोसाकुरामाची थीं। उन्होंने 1762 से 1770 तक शासन किया। उनके बाद से पिछले 250 से अधिक साल में जापान में कोई महिला सम्राट नहीं बनी। फिर महिलाओं के लिए रास्ता क्यों बंद हो गया? पहले जापान में कानून में यह साफ नहीं लिखा था कि केवल पुरुष ही सम्राट बन सकते हैं। 19वीं सदी के आखिर में जापान ने खुद को एक आधुनिक राष्ट्र बनाने की शुरुआत की। जापान पश्चिमी देशों की तरह आधुनिक सेना, प्रशासन और कानूनी व्यवस्था विकसित करना चाहता था। इसी प्रक्रिया में 1889 में मेइजी संविधान लागू किया गया, जिसने जापान में संवैधानिक राजतंत्र की नींव रखी और सम्राट की शक्तियों तथा शाही परिवार से जुड़े नियम तय किए। इसमें यह व्यवस्था की गई कि सिंहासन पर केवल पुरुष वंशज ही बैठेंगे। दूसरे विश्व युद्ध के बाद 1947 में नया शाही परिवार कानून बनाया गया। इसमें भी पुरुष उत्तराधिकार की व्यवस्था को बरकरार रखा गया। यही कानून आज भी लागू है। इसलिए आज भी जापान में महिला सम्राट बनने या महिला की संतान के उत्तराधिकारी बनने की अनुमति नहीं है।

अमेरिका में जेनेरिक दवाओं पर ट्रम्प का नया टैरिफ प्लान-2 साल 0फीसदी, फिर 100फीसदी और 200फीसदी ड्यूटी

भारत की फार्मा कंपनियों पर असर संभव

वॉशिंगटन डीसी। साल 2025 में भारत ने कुल 25.8 बिलियन डॉलर यानी करीब रु2.49 लाख करोड़ की दवाओं का निर्यात किया। इसमें से 9.7 बिलियन डॉलर यानी करीब रु0.94 लाख करोड़ की दवाओं का निर्यात अकेले अमेरिका को हुआ। ये कुल दवाओं का 38फीसदी हैं।हेल्थकेयर एनालिटिक्स फर्म आईक्यूवीआईए के मुताबिक, अमेरिकी फार्मेसियों में बिकने वाली कुल जेनेरिक दवाओं के 47फीसदी प्रिस्क्रिप्शन भारतीय कंपनियां ही पूरी करती हैं। सवाल 5: क्या 100फीसदी या 200फीसदी टैरिफ के बाद भी भारतीय दवाएं अमेरिका में टिक पाएंगी? जवाबः हां, भारतीय जेनेरिक दवाएं फिर भी प्रतिस्पर्धी बनी रह सकती हैं। जीटीआरआई की रिपोर्ट के अनुसार, कई भारतीय जेनेरिक दवाएं अमेरिका में ब्रांडेड दवाओं की तुलना में 7 से 10 गुना सस्ती बिकती हैं। ऐसे में अगर 100फीसदी टैरिफ भी लगा दिया जाता है, तब भी भारतीय दवाएं वहां की ब्रांडेड दवाओं से सस्ती ही रहेंगी। इस अतिरिक्त लागत का अधिकांश हिस्सा अंततः अमेरिकी हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स, इंश्योरेंस कंपनियों और मरीजों पर पड़ेगा, न कि भारतीय निर्यात पूरी तरह खत्म होगा। सवाल 6: क्या प्रमुख भारतीय दवा कंपनियों के पास पहले से अमेरिका में प्लांट हैं? जवाबः हां, भारत की कुछ कंपनियों जैसे सन फार्मा, जायडस लाइफसाइंसेस, लुपिन, अरबिंदो फार्मा, सिप्ला और डॉ. रेड्डीज लेबोरेटरीज जैसी प्रमुख कंपनियां अमेरिका में अपने प्लांट संचालित करती हैं। मैसाचुसेट्स और न्यूयॉर्क में सिप्ला अपने मैन्युफैक्चरिंग प्लांट की क्षमता बढ़ा रही है। डॉ. रेड्डीज ने कहा है कि कॉमर्शियली फायदेमंद होने पर वे अमेरिका में उत्पादन बढ़ाने के लिए तैयार हैं। सन फार्मा का कहना है कि अमेरिका में उनका मौजूदा इंफ्रास्ट्रक्चर पर्याप्त है। सवाल 7: क्या अमेरिका में जेनेरिक दवाओं का उत्पादन शिफ्ट करना आसान है? जवाबः नहीं, यह बहुत मुश्किल और महंगा सौदा है। जेनेरिक दवाओं का कारोबार ग्लोबल सप्लाई चेन पर निर्भर है। विशेष रूप से एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रीडिएंट्स के लिए कंपनियां भारत और चीन पर निर्भर हैं। अमेरिका में नया मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम खड़ा करने के लिए भारी पूंजी की जरूरत होगी, जिससे अमेरिका में दवाओं की कीमतें काफी बढ़ जाएंगी। सवाल 8: इस पूरी स्थिति से निपटने के लिए भारत को क्या कदम उठाने चाहिए? जवाबः जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव का सुझाव है कि भारत को दो मोर्चों पर काम करना होगाः- घरेलू एपीआई उत्पादन बढ़ानाः भारत को राष्ट्रीय प्राथमिकता के आधार पर अपने एपीआई मैन्युफैक्चरिंग बेस पर करना चाहिए ताकि चीन जैसे सिंगल सप्लायर पर निर्भरता कम हो। मार्केट डायवर्सिफिकेशनः भारतीय कंपनियों को अमेरिका पर अपनी निर्भरता कम करते हुए यूरोप, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के अन्य बाजारों में अपना एक्सपोर्ट बढ़ाना चाहिए। सवाल 9: अमेरिकी हेल्थवेयर को भारतीय दवाओं से कितनी बचत होती है? जवाबः अमेरिकी लोग डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल, कैंसर, इंफेक्शियस डिजीज और मेंटल हेल्थ जैसी बीमारियों के इलाज के लिए बड़े पैमाने पर भारतीय जेनेरिक दवाएं लेते हैं।रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय दवाओं ने अकेले 2022 में अमेरिकी हेल्थवेयर सिस्टम को 219 बिलियन डॉलर यानी करीब रु21.14 लाख करोड़ बचाए थे। पिछले एक दशक में यह बचत डॉलर1.3 ट्रिलियन रही है। सवाल 10: अमेरिका में कौन-कौन सी भारतीय फार्मा कंपनियों की दवाएं ज्यादा बिकती हैं?जवाबः डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज, सिप्ला और सन फार्मा जैसी प्रमुख भारतीय कंपनियां अमेरिकी बाजार में सप्लाई करती हैं। अमेरिका में सबसे ज्यादा बिकने वाली भारतीय जेनेरिक दवाओं में शामिल हैं:-मेटफॉर्मिन : डायबिटीज के लिए एटोरवास्टैटिनः कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए लोसार्टनः हाई ब्लड प्रेशर के लिए एमोक्सिसिलिन और सिप्रोफ्लोक्सासिनः एंटीबायोटिक्स दवाएं। सवाल 11: क्या यह फैसला ट्रम्प की व्यापक टैरिफ रणनीति का हिस्सा है? जवाबः हां, ट्रम्प प्रशासन का मुख्य जोर अमेरिकी मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने और विदेशी आयात पर निर्भरता घटाने पर है। इससे पहले भी ब्रांडेड दवा निर्माताओं को अमेरिका में उत्पादन करने या कीमतें कम करने के बदले टैरिफ छूट दी गई थी। इसके अलावा, अमेरिका करीब 60 देशों पर 10फीसदी से 12.5फीसदी का नया टैरिफ लगाने पर विचार कर रहा है, जिसके दायरे में भारत भी आ सकता है। सवाल 12: भारत और अमेरिका के द्विपक्षीय व्यापार समझौतों पर इसका क्या असर होगा? जवाबः अमेरिका और भारत लगातार यह कहते आ रहे हैं कि वे एक द्विपक्षीय व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने के बेहद करीब हैं। ऐसे समय में जेनेरिक दवाओं पर भारी टैरिफ लगाने के इस नए ऐलान ने दोनों देशों के व्यापारिक संबंधों में नई अनिश्चितता पैदा कर दी है। नॉलेज पार्टः क्या होती हैं जेनेरिक दवाएं? जब कोई कंपनी रिसर्च करके नई दवा बनाती है, तो उसे कुछ सालों के लिए पेटेंट मिलता है। इसे ब्रांडेड दवा कहते हैं। पेटेंट खत्म होने के बाद अन्य कंपनियां उसी साल्ट/फार्मूले से सस्ती दवाएं बनाती हैं, जिन्हें 'जेनेरिक दवा' कहा जाता है। इनकी गुणवत्ता और असर ब्रांडेड दवा जैसा ही होता है, लेकिन कीमत काफी कम होती है। रीडर्स व निवेशकों के लिए टिप्स-फार्मा निवेशकों के लिएः अगले 2 साल तक भारतीय कंपनियों पर सीधा वित्तीय असर नहीं पड़ेगा क्योंकि 0फीसदी टैरिफ लागू रहेगा। हालांकि, लॉन्ग टर्म में कंपनियों को अमेरिका में मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी सेटअप करने की रणनीति पर काम करना पड़ सकता है। स्टॉक मार्केट वॉचः सिप्ला, डॉ. रेड्डीज और सन फार्मा जैसी यूएस एक्सपोजर वाली कंपनियों की अगली तिमाही की कमेंट्री पर नजर रखें।

पेड़ हैं तो प्राण हैं आन्दोलन सोनभद्र की सासो को बचाने का आन्दोलन है-संदीप मिश्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। चतरा ब्लाक के पटना केन्द्र सरकार कार्पोरेट नक्सलवाद को बढ़ावा देकर आदिवासी परिवारि किया गया तो आन्दोलन और बड़ा होगा। वही पटना के रामाधार चेरो

ऋणमुक्तेश्वर महादेव मन्दिर परिसर में महादेव का आशिर्वाद लेकर कार्यक्रम शुरु हुआ मन्दिर के महन्थ श्रीमान सिध्दनाथ चौबे ने कहा कि पेड़ हैं तो प्राण हैं यह आन्दोलन अब जन जन का आन्दोलन है हम लोग जान दे देन्गे पर जल जंगल जमीन का दोहन नहीं होने देंगे। वही कार्यक्रम में किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक सदीप मिश्र ने कहा कि जनो के आ्श्रय को उजाड़ने पर लगी हुई है इसे किसी किमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा उन्होंने जनपद के कलेक्टर पर आरोप लगाते हुए कहा कि आप कार्पोरेटो की करिन्दयी बन्द करिए नहीं पूरा जनपद का परिवारि जन आदिवासी भाई बहन आपको घेरने का काम करेगा यदि आदिवासी परिवारि जनो के किसी प्रकार का कुचक्र कर उनका आसरा उजाड़ने का काम ने कहा कि किसी भी कम्पनी को यहाँ का जल जंगल जमीन नहीं उजाड़ने दिया जायेगा पहले के? लगे हुएकिसी कल कारखानों में एक भी आदिवासी को नौकरी नहीं मिली है न मिलेगी इसलिए एक भी कम्पनी नहीं लगने दिया जायेगा। कार्यक्रम सतेन्द्र सिखर सिध्दनाथ चौबे राजेस उराँव नागेन्दर तिरकी रामदयाल दिनेश चेरो विन्दू खरवार बैगा जी व सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे।

'कंपनी के करिंदा के रुप में सोनभद्र प्रशासन कर रहा काम- संदीप मिश्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। ससनई के ग्रामीण पहुंचे जिला अधिकारीकार्यालय मामले

का गंभीरता नहीं लिए जिलाधिकारी वहीं किसान नौजवान' संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्रा ने जिलाधिकारी चर्चित सिंह गौड़ पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि जिन वनाधिकार पट्टाधारकों को पूर्व में वन अधिकार अधिनियम, 2006 के तहत भूमि का अधिकार दिया गया था, उन्हें अब कंपनी स्थापित कराने के उद्देश्य से नोटिस जारी किए जा रहे हैं। संदीप मिश्रा ने आरोप लगाया कि जिला प्रशासन कंपनी के हित में कार्य कर रहा है और वनवासियों एवं आदिवासी परिवारों के अधिकारों की अनदेखी की जा रही है। उन्होंने कहा कि वनाधिकार कानून के तहत दिए गए पट्टों को निरस्त करने या लोगों को उनकी भूमि से बेदखल करने का कोई भी प्रयास बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस दौरान ग्रामीण कन्हैयालाल चेरो ने कहा कि 'हम अपनी पट्टे की जमीन किसी भी कीमत पर कंपनी को नहीं देंगे। चाहे हमारी जान ही क्यों न चली जाए, लेकिन अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे।' वहीं ज्ञानमती देवी ने भी कहा कि 'हम लोग किसी भी हाल में अपनी जमीन कंपनी को नहीं देंगे। भले ही जिलाधिकारी नोटिस जारी करते रहें, लेकिन हम इसका विरोध करेंगे और इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।' संदीप मिश्रा ने कहा कि संघर्ष मोर्चा लंबे समय से 'पेड़ है तो प्राण है' अभियान के माध्यम से जंगल, पर्यावरण और आदिवासी अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन चला रहा है।यदि कंपनी लगाने के नाम पर वनाधिकार पट्टाधारकों और ग्रामीणों के अधिकारों का हनन किया गया तो व्यापक जनआंदोलन किया जाएगा, जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी। आज के कार्यक्रम में कन्हैया चेरो विजय चेरो ज्ञानमति राजेश चेरो दिनेश चेरो विन्दू खरवार मुखलाल चेरो व उमाशंकर यादव राजू पासवान सैकड़ों आदिवासी परिवारि जन उपस्थित रहे।

जनपद में सुरक्षा व्यवस्था होगी हाईटेक, प्रमुख स्थानों पर लगाए जाएंगे सीसीटीवी कैमरे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद में कानून-व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा अल्ट्राटेक के सीएसआर फंड के माध्यम से आधुनिक सीसीटीवी कैमरे स्थापित कराए जाएंगे। इन

कैमरों को जनपद के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों, दुर्घटना बहुल क्षेत्रों, बाजारों, संवेदनशील स्थानों, चोरी एवं आपराधिक घटनाओं की आशंका वाले क्षेत्रों तथा अन्य महत्वपूर्ण मार्गों पर लगाया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य जनपद में सुरक्षा व्यवस्था को आधुनिक तकनीक से सशक्त बनाना तथा नागरिकों को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना है। वर्षभर होगी सतत निगरानी, कानून-व्यवस्था होगी और मजबूतः-यह सीसीटीवी व्यवस्था किसी विशेष आयोजन तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि वर्षभर निरंतर संचालित रहेगी। कैमरों के माध्यम से जनपद की कानून-व्यवस्था, सार्वजनिक सुरक्षा, यातायात व्यवस्था, प्रमुख सार्वजनिक स्थलों की गतिविधियों तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं की सतत निगरानी की जाएगी। इससे अपराधों की रोकथाम, संदिग्ध गतिविधियों पर त्वरित नजर, यातायात प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने तथा किसी भी आपात स्थिति में शीघ्र एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने में जिला प्रशासन एवं पुलिस को महत्वपूर्ण सहायता मिलेगी। यह आधुनिक निगरानी प्रणाली सुरक्षित, सुव्यवस्थित एवं बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी। अपराध नियंत्रण एवं त्वरित कार्रवाई में मिलेगी सहायताः-सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से चोरी, लूट, तोड़फोड़ एवं अन्य आपराधिक घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के साथ-साथ अपराधियों की शीघ्र पहचान एवं गिरफ्तारी में भी सहायता मिलेगी। साथ ही यातायात संचालन, सार्वजनिक गतिविधियों की निगरानी तथा विभिन्न प्रशासनिक व्यवस्थाओं के प्रभावी संचालन में भी यह प्रणाली उपयोगी सिद्ध होगी। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से की सहयोग की अपीलः-जिलाधिकारी ने जनपदवासियों, व्यापारियों, प्रतिष्ठान संचालकों एवं संस्थानों से अपील की है कि वे भी अपनी दुकानों, प्रतिष्ठानों, आवासों, कार्यालयों एवं अन्य महत्वपूर्ण परिसरों में स्वेच्छा से सीसीटीवी कैमरे अवश्य लगवाएं। नागरिकों की सहभागिता से सुरक्षा व्यवस्था और अधिक प्रभावी बनेगी तथा चोरी, लूट एवं अन्य आपराधिक घटनाओं की रोकथाम के साथ-साथ अपराधियों की पहचान एवं गिरफ्तारी में भी सहायता मिलेगी।

अल्ट्राटेक के सीएसआर फंड से स्थापित होगी आधुनिक निगरानी प्रणाली

विशेष न्यायाधीश (पॉक्सो एक्ट), सोनभद्र द्वारा दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट के मामले में दोषसिद्ध अभियुक्त को 15 वर्ष तक के कठोर कारावास की सजा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। विशेष न्यायाधीश (पॉक्सो एक्ट) / अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, सोनभद्र श्री ओमकार शुक्ला ने सत्र परीक्षण संख्या 279/2025, राज्य बनाम रमाशंकर में अभियुक्त रमाशंकर पुत्र स्व. शिवभजन, निवासी ग्राम बेलहत्थी टोला पिरहवा, थाना हाथीनाला, जनपद सोनभद्र को दोषसिद्ध ठहराते हुए कठोर कारावास एवं अर्थदण्ड से दंडित किया।

अभियोजन के अनुसार, दिनांक 26 जनवरी 2025 को अभियुक्त ने नाबालिग पीड़िता के साथ अश्लील हरकत एवं बलात्कार की घटना कारित की। पीड़िता की छोटी बहन के विरोध करने पर उसको रेलवे ट्रैक पर जान मारने की धमकी देते हुए धक्का दे दिया जिससे उसका दाहिना पैर पंजे के ऊपर से कटकर अलग हो गया और उसे गंभीर चोटें आईं। इस संबंध में थाना हाथीनाला पर मुकदमा अपराध संख्या 3/2025 पंजीकृत हुआ।

विवेचना के दौरान पीड़ितागण का चिकित्सीय परीक्षण, आयु संबंधी अभिलेख, एफएसएल रिपोर्ट तथा अन्य साक्ष्य संकलित कर आरोप पत्र न्यायालय में प्रेषित किया गया। विचारण के दौरान अभियोजन की ओर से कुल 12 साक्षियों का परीक्षण कराया गया तथा आवश्यक दस्तावेजी एवं वैज्ञानिक साक्ष्य न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए गए। न्यायालय ने उपलब्ध साक्ष्यों एवं गवाहों के आधार पर अभियुक्त को धारा 64(1), 74, 117(3), 351(2) भारतीय न्याय संहिता तथा धारा 3/4 पॉक्सो अधिनियम के अपराधों में दोषी पाया।

न्यायालय ने अभियुक्त को धारा 4 पॉक्सो अधिनियम में 10 वर्ष का कठोर कारावास एवं रु20,000 अर्थदण्ड, धारा 117(3) बीएनएस में 15 वर्ष का कठोर कारावास एवं रु20,000 अर्थदण्ड,

धारा 74 बीएनएस में 2 वर्ष का कारावास एवं रु5,000 अर्थदण्ड तथा धारा 351(2) बीएनएस में 1 वर्ष का कारावास एवं रु1,000 अर्थदण्ड से दंडित किया। सभी सजाएँ साथ-साथ चलेंगी।

अर्थदण्ड की आधी राशि पीड़िता तथा आधी राशि घायल बालिका के पुनर्वास हेतु दिए जाने का आदेश भी पारित किया गया।

राज्य की ओर से अभियोजन का संचालन विशेष लोक अभियोजक श्री दिनेश प्रसाद अग्रहरी एवं श्री नीरज कुमार सिंह द्वारा प्रभावी रूप से किया गया।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत कला, मेहंदी प्रतियोगिता एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन,एक वृक्ष मां के नाम अभियान के अंतर्गत हुआ पौधरोपण, छात्र-छात्राओं को किया गया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी के निर्देशन, मुख्य विकास अधिकारी के मार्गदर्शन तथा जिला प्रोबेशन अधिकारी श्री पुनीत टंडन के नेतृत्व में महिला कल्याण विभाग, सोनभद्र द्वारा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत द आर्यन एकेडमी, संत नगर, रॉबर्ट्सगंज में कला एवं मेहंदी प्रतियोगिता, पौधरोपण तथा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। कला प्रतियोगिता में कक्षा 5 की माही ने प्रथम, कक्षा 7 की परी मिश्रा ने द्वितीय तथा कक्षा 7 की अनिका त्रिपाठी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं मेहंदी प्रतियोगिता में कक्षा 9 की मानवी मौर्या प्रथम, कक्षा 9 की शुभांगी मौर्या द्वितीय एवं कक्षा 6 की अनुराधा राजवंशी तृतीय स्थान पर रहीं। विजेता छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को बेटी

बचाओ-बेटी पढ़ाओ, महिला सशक्तिकरण एवं बालिका शिक्षा के महत्व के साथ महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। जेंडर स्पेशलिस्ट साधना मिश्रा ने महिला हेल्पलाइन-181, चाइल्ड हेल्पलाइन-1098, आपातकालीन सेवा-112 एवं साइबर क्राइम हेल्पलाइन-1930 के संबंध में जागरूक करते हुए बाल अधिकार एवं बाल संरक्षण पर विस्तार से जानकारी दी। दीपिका सिंह ने मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, निराश्रित महिला (विधवा) पेंशन योजना एवं मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना की जानकारी देकर पात्र लाभार्थियों को योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा जालान ने एक वृक्ष मां के नाम अभियान के अंतर्गत पौधरोपण करते हुए बेटियां बचेंगी तभी पढ़ेंगी, बेटी हैं तो कल है तथा पौधा है तो जीवन हैष् का संदेश दिया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा जालान, दीपिका सिंह, साधना मिश्रा, शिक्षक-शिक्षिकाएँ उमाकांत दुबे, महेश त्रिपाठी, निशा चौबे, यासमीन, सुषमा पांडे, प्रिया, सुमन, अर्पणा सहित 127 छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

सहेली के 'एक्स' से हुआ प्यार,पर प्यार के साथ गिल्ट भी है और डर भी, क्या मैं दोस्त को धोखा दे रही हूं?

नॉएडा। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से सवाल- मेरी उम्र 25 साल है। मेरी एक क्लोज फ्रेंड का साल भर पहले ब्रेकअप हो गया था, लेकिन मेरी और उसके एक्स की बातचीत होती रही। अब हम एक-दूसरे को पसंद करने लगे हैं। मुझे डर है कि उसे डेट करने से मेरी सालों पुरानी दोस्ती टूट जाएगी। क्या अपनी फ्रेंड के 'एक्स' को डेट करना गलत है? क्या मुझे दोस्ती और प्यार में से किसी एक को ही चुनना होगा? जवाब- सबसे पहले तो सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। आपने जो सिचुएशन बताई है, उसमें आपकी कोई गलती नहीं है। यह समस्या समाज की और लोगों की संकुचित सोच की है। चलिए आपकी सिचुएशन को समझते हैं और उसके सॉल्यूशन पर बात करते हैं। यह नैतिक अपराध नहीं, भावनात्मक चुनौती है-यह स्थिति पहली नजर में थोड़ी जटिल और संवेदनशील लगती है, लेकिन ऐसा नहीं है। आपके सावल से लग रहा है जैसे आप अपराधबोध में हैं। जबकि आपने जो किया है, वह नैतिक रुप से बिल्कुल भी गलत नहीं है। यह सिर्फ भावनात्मक चुनौती है। यह रिश्ता आपको और आपकी सहेली को कितना प्रभावित करेगा, यह तीन बातों पर निर्भर करेगा-दोनों पक्ष इस बात को कितनी मैच्योरिटी के साथ हैंडल करते हैं। वो कितनी गहराई और उदारता दिखाते हैं। वे अपने निजी जीवन में भावनात्मक रूप से कहां खड़े हैं और कितने खुश व संतुष्ट हैं। आपको कौन से सवाल परेशान कर रहे हैं? अपने दोस्त के एक्स के साथ रिश्ते में आने पर जो सिचुएशन बनती है, उसमें हमारा दिमाग 'लॉजिक' से ज्यादा 'गिल्ट' (अपराधबोध) से घिर जाता है। आप भी इसी के चलते खुद को कटघरे में महसूस कर रही हैं। आपको कौन से सवाल परेशान कर रहे हैं- मन में बुरे ख्याल क्यों उठ रहे हैं? आपके मन में जो सवाल उठ रहे हैं, उनके पीछे आपका अपना ही बनाया डर है। यह डर सामाजिक छवि और दोस्ती टूटने की आशंका से उपजा है। इस समाज में 'सहेली के एक्स' को डेट करना थोड़ा अजीब नजर से देखा जाता है। जब आप ऐसी सीमाओं को लांघते हैं, तो डर सताने लगता है कि लोग मुझे 'विलेन' समझेंगे। इन सवालों का तार्किक जवाब क्या है? भावनाओं के भंवर में लोग अक्सर लॉजिक भूल जाते हैं। अगर ठंडे दिमाग से सोचें, तो समझ आएगा कि आपके डर के पीछे की वजहें उतनी मजबूत नहीं हैं, जितनी आपकी खुशी की संभावनाएं हैं। आप कैसा महसूस कर रहे हैं? किसी भी रिश्ते में दर्द या खुशी इस बात से तय नहीं होती कि सिचुएशन बाहर से कितनी जटिल है। अगर आपकी दोस्त अपनी जिंदगी में आगे बढ़ चुकी है और खुश है, तो संभव है कि उसे ज्यादा तकलीफ न हो। अगर वह अभी भी ब्रेकअप के दर्द से गुजर रही है, तो यह खबर उसे थोड़ा झटका दे सकती है। यह निश्चित है कि अगर आप दोनों इस रिश्ते में खुश हैं तो इस सिचुएशन को संभालना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है।रिलेशनशिप में हमारी इनसिक्योरिटी की सबसे कॉमन वजह ये है कि लोग क्या कहेंगे? ज्यादातर लोग इसी डर से अपनी खुशी की बलि दे देते हैं। याद रखिए आपकी सहेली और उस लड़के का ब्रेकअप इसलिए हुआ, क्योंकि उनके बीच कुछ सही नहीं था।अगर आप दोनों साथ में बेहतर महसूस कर रहे हैं, तो मुमकिन है कि आप एक-दूसरे के लिए बेटर मैच' हों। प्यार की इस भावना को स्वीकार करना गलत नहीं है। आप इस रिश्ते में कैसा महसूस कर रही हैं, यह समझने के लिए खुद से कुछ सवाल पूछें- समय पर छोड़ दें कुछ फैसले ये भी हो सकता है कि जब आप अपनी दोस्त को यह बात बताएं, तो उसे एक पल को झटका लगे या बुरा महसूस हो। लेकिन कुछ चीजें समय और मैच्योरिटी के साथ समझ आती हैं। भविष्य में जब वह देखेगी कि आप दोनों साथ में खुश और स्टेबल हैं, तो शायद उसका नजरिया बदल जाए। कई बार रास्ते हमें खुद ही सही मंजिल तक पहुंचा देते हैं, हमें सिर्फ रास्ता तय करना है। आपको क्या करना चाहिए? अगर आप इस रिश्ते को आगे बढ़ाना चाहती हैं, तो इन 4 बातों का ध्यान रखें- ईमानदार रहें- आपकी दोस्त को यह बात किसी और से पता चले, उससे पहले खुद ही पूरी बात बता दें। उससे यह रिश्ता छिपाना ही सबसे बड़ा धोखा है। सफाई न दें- आपकी सहेली का रिलेशनशिप भले ही कैसा रहा हो, उससे कभी ये न कहें कि 'तुम दोनों का रिश्ता खराब था।' स्पेस दें- खबर सुनने के बाद उसे गुस्सा करने का, नाराज होने का स्पेस दें। उसे मजबूर न करें कि वह तुरंत आपके रिश्ते को एक्सेप्ट ही करे। डेडलाइन तय न करें- दोस्ती को फिर से सामान्य होने में समय लग सकता है तो उसे पूरा वक्त दें। अंतिम सलाह-प्यार कभी अपराध नहीं हो सकता है। अगर आपकी नीयत साफ है और आप सहेली का सम्मान करती हैं, तो डरने की जरूरत नहीं है। अपनी खुशी को स्वीकार करें, सहेली के प्रति सहानुभूति रखें और समय को अपना काम करने दें। कई बार अच्छे रिश्ते कठिन परिस्थितियों से ही निकलकर आते हैं।

बच्चों को अब होमवर्क के लिए मोबाइल की जरुरत पड़ रही हैं हर सवाल एआई से तो खुद क्या सीख पायेंगे क्या करूं?

जयपुर। विषय को समझेंगे- एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ। सवाल- मैं पटना का रहने वाला हूं। मेरी 13 साल की बेटी सातवीं कक्षा में पढ़ती है। पिछले कुछ समय से अपने होमवर्क और प्रोजेक्ट के लिए वह एआई टूल्स का इस्तेमाल करने लगी है। उसे कुछ भी पूछना-जानना हो तो सीधे चैट जीपीटी से पूछकर जवाब कॉपी कर लेती है। खुद सोचने या मेहनत करने से बचने लगी है। मुझे लगता है कि जैसे वह अब इसी पर निर्भर हो गई है। हमें डर है कि कहीं इससे उसकी सोचने-समझने की क्षमता और लर्निंग एबिलिटी कम न हो जाए। हमें क्या करना चाहिए? जवाब- आपकी चिंता बिल्कुल वाजिब है। आज के समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) बच्चों की पढ़ाई और रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। इसलिए बच्चों का एआई टूल यूज करना स्वाभाविक है। लेकिन उन्हें इसका सही इस्तेमाल सिखाना जरूरी है। अगर एआई टूल्स का सही इस्तेमाल किया जाए तो ये सीखने का एक अच्छा मीडियम बन सकता है। लेकिन समस्या तब होती है, जब बच्चा पूरी तरह इस पर निर्भर हो जाता है। इससे उसकी सोचने-समझने और समस्या हल करने की क्षमता कम होने लगती है। आपने बताया कि आपकी बेटी पढ़ाई में अच्छी है। लेकिन अब वह मेहनत से बचने के लिए सीधे एआई टूल्स से जवाब लेने लगी है। यह डिपेंडेंसी का एक संकेत है। लेकिन आपने सही समय पर इसे नोटिस किया है। इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है। इसे समझदारी के साथ आसानी से हैंडल किया जा सकता है। ध्यान रखें, एआई एक महत्वपूर्ण तकनीक है और आगे इसका इस्तेमाल बढ़ेगा। इसलिए पेरेंट्स का उद्देश्य उसे एआई से दूर रखना नहीं, बल्कि सही यूज सिखाना होना चाहिए। एआई पर डिपेंडेंसी का बच्चे पर प्रभाव- एआई टूल्स पर जरूरत से ज्यादा निर्भरता बच्चे के सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। जब बच्चा हर सवाल का जवाब बिना खुद सोचे सीधे एआई से लेता है तो उसकी समझ और बुद्धि कमजोर होने लगती है। मनोवैज्ञानिक रूप से हमारा दिमाग 'यूज इट ऑर लूज इट' के सिद्धांत पर काम करता है। यानी जितना हम सोचते-समझते और समस्या हल करते हैं, उतना ही दिमाग तेज और एक्टिव होता है। लेकिन जब यह प्रक्रिया कम होने लगती है, तो धीरे-धीरे सोचने-समझने और एनालिसिस करने की क्षमता कमजोर पड़ सकती है। इसके अलावा एआई पर निर्भरता से बच्चे में धैर्य की कमी, जल्दी हार मानने की आदत और कॉपी-पेस्ट लर्निंग जैसी आदतें आ सकती हैं। ये आदतें आगे चलकर बच्चे की पढ़ाई और पर्सनैलिटी दोनों को प्रभावित करती हैं। पेरेंट्स बच्चे को समझाएं कि एआई एक लर्निंग टूल है, जो उनकी पढ़ाई और समझ को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। लेकिन यह कभी भी टीचर या उनके अपने दिमाग का विकल्प नहीं बन सकता। बच्चे के बताएं कि जब वे खुद सोचते हैं, सवाल करते हैं, अलग-अलग संभावनाओं को समझते हैं और गलती करके उससे सीखते हैं। इसलिए जरूरी है कि एआई का इस्तेमाल केवल गाइड या सपोर्ट के रूप में किया जाए, न कि शॉर्टकट के तौर पर। सवाल या होमवर्क में पहले खुद प्रयास करने के लिए प्रेरित करें। जब कहीं अटक जाए, तभी एआई की मदद लेने को कहें। एआई से मिला जवाब सीधे इस्तेमाल करने के बजाय उसे पढ़कर समझना और अपने शब्दों में लिखने को कहें। होमवर्क या पढ़ाई के दौरान एआई का कब और कितना इस्तेमाल करना है, इसके लिए स्पष्ट नियम बनाएं। दिन का कुछ समय ऐसा तय करें, जब बच्चा बिना किसी डिजिटल मदद के खुद पढ़ाई और प्रैक्टिस करे। बच्चे को बताएं कि एआई से बेहतर जवाब पाने के लिए सही और स्पष्ट सवाल पूछना भी एक स्किल है। एआई हमेशा 100फीसदी सही नहीं होता। इसलिए किताब, टीचर या दूसरे सोर्स से जानकारी मिलान करना सिखाएं। सही एआई यूज के लिए पेरेंट्स ग्राफिक में दिए कुछ आसान तरीके अपना सकते हैं। पेरेंट्स को चाहिए कि वे बच्चे की कोशिश और सोचने की प्रक्रिया को सराहें। आप अपनी बेटी से कह सकते हैं कि पहले वह खुद सवाल हल करने की कोशिश करे और बाद में एआई से अपने जवाब की तुलना करे। इससे उसे दो फायदे होंगे- वह खुद सोच पाएगी। एआई से नई जानकारी भी सीख पाएगी। इसके अलावा बच्ची को ऐसी एक्टिविटीज में शामिल करें, जो उसकी इमैजिनेशन और क्रिएटिविटी को बढ़ाए। बच्चे से बातचीत जरूरी इस उम्र में बच्चों के साथ बातचीत बहुत जरूरी होती है। अगर पेरेंट्स सीधे यह कहते हैं कि 'एआई मत यूज करो' तो बच्चा इससे चिड़चिड़ा हो सकता है। इसलिए बेहतर है कि आप अपनी बेटी से बातचीत करें और उससे पूछें कि 'उसे एआई में क्या अच्छा लगता है', 'वह इसका इस्तेमाल क्यों करती है।' जब बच्ची खुलकर अपनी बात बताएगी तो आप उसकी सोच को समझेंगे। आप उसे यह समझा सकते हैं कि एआई से मदद लेना ठीक है, लेकिन सीखना बहुत जरूरी है। याद रखें, एआई के यूज के साथ संतुलन जरूरी है। अंत में यही कहूंगी कि आप अपनी बच्ची को समझाएं कि एआई एक 'टॉर्च' की तरह है, जो रास्ता दिखा सकती है, लेकिन चलना उसे खुद ही होता है। जब वह समझेगी कि एआई सिर्फ हेल्पिंग टूल है। उसे अपनी सोच-समझ के लिए मेहनत और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी, तभी वह तकनीक का संतुलित और सही उपयोग करना सीख पाएगी।

सऊदी में पर्पल-ग्रीन रंग के टेनिस सेंटर में होंगे 30 कोर्ट, 33 हजार दर्शकों की क्षमता और रिट्रैक्टेबल छत

रियाद। कभी टेनिस की सबसे बड़ी पहचान लंदन का विम्बलडन हुआ करता था। उसकी हरी-बैंगनी रंगत, घास से ढका सेंटर कोर्ट और शाही अंदाज दुनिया भर के खिलाड़ियों और फैंस को आकर्षित करता है। अब उसी पहचान की झलक करीब 5,000 किलोमीटर दूर सऊदी अरब के रेगिस्तान में दिखाई देने वाली है। सऊदी अरब का नया नेशनल टेनिस सेंटर पहली नजर में विम्बलडन की याद दिला सकता है। सेंटर कोर्ट का बाहरी हिस्सा घास जैसा बनाया जाएगा, रंग भी वही हरा और बैंगनी होगा और इसकी डिजाइन भी काफी हद तक ऑल इंग्लैंड क्लब से प्रेरित है। दिलचस्प बात यह है कि इस प्रोजेक्ट को डिजाइन करने वाली आर्किटेक्चर कंपनी पॉपुलस वही है, जिसने विम्बलडन के सेंटर कोर्ट की मशहूर रिट्रैक्टेबल रूफ तैयार की थी। रिट्रैक्टेबल रूफ ऐसी छत होती है जिसे जरूरत पड़ने पर खोला और बंद किया जा सकता है। हालांकि, यहां एक बड़ा फर्क भी होगा। बाहर से यह कोर्ट भले ही घास वाला दिखे, लेकिन अंदर खिलाड़ी घास पर नहीं, बल्कि हार्ड कोर्ट पर खेलेंगे। कोर्ट की सतह भी बैंगनी और हरे रंग की होगी। सेंटर कोर्ट में 15 हजार दर्शकों के बैठने की क्षमता होगी और उस पर रिट्रैक्टेबल छत लगाई जाएगी, ताकि 45 से 50 डिग्री तक पहुंचने वाली गर्मी में भी मैच आराम से कराए जा सकें। इसके अलावा 8 हजार क्षमता वाला एक और कोर्ट भी छत से ढका होगा। पूरे परिसर में कुल 30 टेनिस कोर्ट होंगे। इनमें 28 हार्ड कोर्ट, 2 क्ले कोर्ट शामिल हैं। सभी कोर्ट मिलाकर 33 हजार दर्शकों के बैठने की व्यवस्था होगी। सऊदी के लिए यह सिर्फ एक स्टेडियम नहीं, बल्कि विजन 2030 का हिस्सा है। लक्ष्य है कि तेल पर निर्भर अर्थव्यवस्था को खेल, पर्यटन और मनोरंजन के जरिए नई पहचान दी जाए। इसी रणनीति के तहत सऊदी पहले ही कई टूर्नामेंटों का प्रायोजक बन चुका है। 2028 से एटीपी मास्टर्स-1000 टूर्नामेंट की मेजबानी भी करेगा। सिक्स किंग्स स्लैम जैसी प्रदर्शनी प्रतियोगिता में अल्कारेज, जोकोविच और यानिक सिनर जैसे सितारे खेल चुके हैं। 34 लाख करोड़ की लागत से बन रहे शहर का हिस्सा होगा टेनिस सेंटर-यह टेनिस सेंटर किद्दिया सिटी का हिस्सा होगा, जो रियाद से करीब 50 किलोमीटर दूर बन रही नई स्पोर्ट्स, एंटरटेनमेंट और कल्चर सिटी है। इस पूरे शहर पर लगभग 34 लाख करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। यह शहर आकार में पेरिस से लगभग तीन गुना बड़ा होगा। इसी शहर में प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान स्टेडियम, 18 होल का गोल्फ कोर्स, थीम पार्क आदि बनाए जा रहे हैं।

नाम झुन्नू था, दिव्यांगता के कारण लोग झंडू कहने लगे, अब खेल पलटा भारत के लिए कॉमनवेल्थ गेम्स में पैरा पावरलिफ्टिंग का ब्रॉन्ज जीता

नालंदा। कॉमनवेल्थ गेम्स में पैरा पावरलिफ्टिंग में ब्रॉन्ज मेडल जीतने वाले झंडू कुमार के लिए उनकी मां कमला देवी के शब्द सबसे बड़ी प्रेरणा बने। मुकाबले से कुछ देर पहले व्हाट्सऐप कॉल पर मां ने बेटे से कहा, 'बेटा, जब वहां तक पहुंच ही गए हो, तो देश का तिरंगा फहरा कर आना। पहला, दूसरा और तीसरा स्थान में से कोई भी स्थान लेकर आना।' मेडल जीतने के बाद झंडू ने सबसे पहले मां को फोन किया और कहा, 'तोहनी के आशीर्वाद से जीत गई लो मइया (मां, आपके आशीर्वाद से मेडल जीत गया)।' बड़े भाई कुंदन कुमार ने बताया कि हम चार भाइयों में झंडू सबसे छोटे हैं। एक भाई का निधन हो चुका है। मुकाबले से पहले शुक्रवार रात करीब 8 बजे झंडू ने घर पर फोन किया था। परिवार के सभी लोगों ने उन्हें 'विजयी भव' कहकर आशीर्वाद दिया। इसके बाद उन्होंने मां से बात की। मां ने कहा, 'जब वहां तक पहुंच गए हो, तो झंडा फहरा कर ही आना और पहला, दूसरा, तीसरा स्थान ले आना।' मां कमला देवी ने भास्कर से कहा, 'रात भर जगलीईओ और देखलियो बाबू ने देश का नाम रोशन कईलन।' (रात भर जागकर उनका मुकाबला देखा। झंडू को देश का नाम रोशन करते देखा।) उन्होंने बताया, 'जीतने के बाद झंडू ने कहा- जीत गईलियो मइया। उससे पहले भी आर्शीवाद लेवे खातिर फोन कईले रहलन। तब हम कहनी कि झंडा फहराकर आना।' नाम को लेकर उन्होंने बताया कि उनका नाम झुन्नू रखा गया था, लेकिन धीरे-धीरे सभी लोग उन्हें झंडू कहने लगे। रात 2 बजे तक जागकर देखा मुकाबला- कुंदन कुमार ने बताया कि पूरा परिवार रात 9 बजे तक खाना खा चुका था, ताकि सभी मिलकर झंडू का मुकाबला देख सकें। पहले झंडू ने बताया था कि उनका इवेंट रात 10 बजे होगा, लेकिन मुकाबला रात करीब 2 बजे शुरू हुआ। उन्होंने पहली कोशिश में 180 किलो वजन उठाया तो पूरे परिवार के चेहरे पर मुस्कान आ गई। मां कमला देवी और पिता रामानंद पासवान खुशी से मुस्कुरा रहे थे। इसके बाद झंडू ने 196 किलो वजन उठाया तो घर में तालियां गूंज उठीं। मां-पिता ने पूछा कि क्या हुआ, सभी ताली क्यों बजा रहे हैं? तब परिवार वालों ने बताया कि झंडू ने पदक जीत लिया है। सुबह बाजार पहुंचे तो लोगों ने दी बधाई-कुंदन बताते हैं कि सुबह जब वह सब्जी की दुकान जा रहे थे, तब रास्ते में मिलने वाले लोग रोक-रोककर बधाई दे रहे थे। जो लोग पहले उन्हें झंडूवा कहकर बुलाते थे, वही अब कह रहे थे, 'झंडू जी की जीत पर बधाई।' लगातार फोन भी आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि झंडू पहले मां-पिता के साथ सब्जी की दुकान पर हाथ बंटाते थे। बाद में उन्होंने जिम जाना शुरू किया और धीरे-धीरे पावरलिफ्टिंग में रुचि बढ़ती गई। परिवार ने कभी उन्हें रोका नहीं, बल्कि हर कदम पर पूरा साथ दिया। पढ़ाई के साथ मां-पिता के काम में भी हाथ बंटाते थे-झंडू हरनौत के सबनौह डीह गांव के रहने वाले हैं। चार भाइयों और तीन बहनों में सबसे छोटे हैं। वह दिव्यांग हैं। चार साल की उम्र में उन्हें पोलियो हो गया था, जिससे कमर के नीचे शरीर का एक हिस्सा प्रभावित हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। मां-पिता हरनौत बाजार में सड़क किनारे आलू-प्याज बेचकर परिवार का पालन-पोषण करते हैं।

धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर बॉलीवुड का रिएक्शन- प्रियंका चोपड़ा ने नई पीढ़ी को सराहा, प्रकाश राज बोले- आपने सरकार को घुटनों पर ला दिया'

मुंबई। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे के बाद छात्रों के आंदोलन का समर्थन करने वाले

बॉलीवुड और एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री के कई कलाकारों ने सोशल मीडिया

पर प्रतिक्रिया दी है। अभिनेता प्रकाश राज, कॉमेडियन-एक्टर वीर दास, अभिनेता अभिषेक बनर्जी और कॉमेडियन समय रैना समेत कई सेलेब्स ने छात्रों को बधाई देते हुए उनके आंदोलन का समर्थन किया। वहीं विजय वर्मा, सान्या

मल्होत्रा और आयशा खान सहित कई कलाकारों और डिजिटल क्रिएटर्स ने शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही की जरूरत पर जोर दिया। प्रकाश राज बोले- सरकार को भी घुटनों पर झुकाया जा सकता है-प्रकाश राज ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, 'मेरे प्यारे साथियों, आपको बहुत-बहुत बधाई। सोनम वांगचुक सर और उन सभी लोगों को भी बधाई, जो युवाओं के साथ मजबूती से खड़े रहे। आपने साबित कर दिया कि सरकार को भी घुटनों पर झुकाया जा सकता है।' वीर दास बोले- जीत आपकी है, अब जश्न मनाइए-वीर दास ने छात्रों के नाम संदेश लिखते हुए कहा, 'आपने उस छोटी-सी बात को फिर से जीवित कर दिया, जिसे हम स्कूल की किताबों में पढ़कर भूल गए थे। प्यारे बच्चों, आगे चाहे जो भी हो, जीत आपकी है। अब जाइए और इस जीत का जश्न मनाइए।' समय रैना ने लिखा- छात्रों को और ताकत मिले-कॉमेडियन समय रैना ने छात्रों के समर्थन में संक्षिप्त पोस्ट करते हुए लिखा, 'छात्रों को और ताकत मिले।' उनका यह संदेश सोशल मीडिया पर तेजी से शेयर किया जा रहा है। अभिषेक बनर्जी बोले- एकजुट रहेंगे तो मजबूत रहेंगे- अभिनेता अभिषेक बनर्जी ने अपनी प्रोफाइल फोटो बदलते हुए लिखा, 'मैंने अपनी प्रोफाइल फोटो बदल ली है। नई पीढ़ी को बहुत-बहुत बधाई। साथ ही एक बात हमेशा याद रखिए- अगर हम एकजुट रहेंगे तो मजबूत रहेंगे, बंट जाएंगे तो हार जाएंगे।' प्रियंका चोपड़ा ने नई पीढ़ी को बताया जीत का हकदार-प्रियंका चोपड़ा ने भी इस घटनाक्रम पर खुशी जताई और अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए आंदोलन का नेतृत्व करने वाली नई पीढ़ी की तारीफ की। प्रियंका ने ह्यूमन्स ऑफ बॉम्बे की एक पोस्ट शेयर की, जिसमें लिखा था, 'देशभर में 30 दिन तक चले छात्र आंदोलन और सोनम वांगचुक की 26 दिन की कठिन भूख हड़ताल के बाद धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफा दे दिया।' इस पोस्ट पर उन्होंने ताली बजाने वाला, भावुक चेहरा, काला चश्मा और लाल दिल वाला इमोजी लगाकर अपनी प्रतिक्रिया दी। इसके बाद प्रियंका ने इंडिया कल्चरल हब की एक और पोस्ट शेयर की, जिस पर लिखा था, 'यह जीत नई पीढ़ी की है।' प्रियंका ने इसके बाद सोनम वांगचुक की एक तस्वीर भी अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर की। हालांकि, इस तस्वीर के साथ उन्होंने कुछ भी नहीं लिखा। धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे के बाद अभिनेता विजय वर्मा, सान्या मल्होत्रा, आयशा खान समेत कई कलाकारों और डिजिटल क्रिएटर्स ने भी छात्रों की चिंताओं का समर्थन किया। इन सभी ने शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और छात्रों की आवाज सुने जाने की जरूरत पर जोर दिया। सोशल मीडिया पर इन कलाकारों के पोस्ट तेजी से वायरल हो रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग इसे छात्रों की एकजुटता और उनकी आवाज की जीत बता रहे हैं।

हिट फिल्म देने के बाद भी 15 महीने बेरोजगार रहीं कृति
स्टारकिड्स ने छीने बड़े रोल, जिस किरदार पर सवाल उठे, उसी ने दिलाया नेशनल अवॉर्ड

मुंबई। आज कृति सेनन बॉलीवुड की सफल अभिनेत्रियों में गिनी जाती हैं। उनके नाम नेशनल अवॉर्ड, कई सुपरहिट फिल्में और अपना प्रोडक्शन हाउस है। लेकिन इस मुकाम तक

पहुंचने का रास्ता रिजेक्शन, अकेलेपन, तानों और आत्मविश्वास की लड़ाई से होकर गुजरा है। यह कहानी उस लड़की की है, जिसने कभी एक्टिंग का सपना नहीं देखा था, लेकिन रास्ता चुना तो पीछे मुड़कर नहीं देखा। 'पहले रैंप शो के बाद मैं ऑटो में बैठकर पूरे रास्ते रोती रही थी... पहले फोटोशूट के बाद भी घर जाकर रोई थी। हिट फिल्म के बाद भी 15 महीने काम नहीं मिला। कई बार ऐसा हुआ कि जिस फिल्म के लिए ऑडिशन दिया, आखिर में वह किसी स्टार किड को मिल गई। कई-कई महीने तक कोई ऑडिशन नहीं आता था। मैं मां को दिन में दस-दस बार फोन करके रोती थी।' दिल्ली की इंजीनियरिंग स्टूडेंट, जिसने सपनों के दम पर बॉलीवुड तक का सफर तय किया- कृति सेनन का जन्म 27 जुलाई 1990 को नई दिल्ली में हुआ। उनके पिता राहुल सेनन चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, जबकि मां गीता सेनन दिल्ली विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर रह चुकी हैं। उनकी छोटी बहन नूपुर सेनन भी अभिनय और सिंगिंग की दुनिया में सक्रिय हैं। कृति ने शुरुआती पढ़ाई दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस), आर.के. पुरम से की। इसके बाद जेपी इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, नोएडा से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग में बी.टेक की डिग्री हासिल की। 'मैं पढ़ाई में अच्छी थी, फिल्मों में आने का कभी नहीं सोचा'- कृति सेनन ने बॉलीवुड बबल को दिए इंटरव्यू में बताया था कि बचपन में उनका पूरा ध्यान पढ़ाई पर रहता था। वह पढ़ाई में अच्छी थीं, लेकिन बेहद शर्मीली भी थीं। वह कहती हैं, 'मुझे स्टेज पर जाने से भी डर लगता था। डांस करना पसंद था, लेकिन एक्टिंग, थिएटर या ड्रामा में मैंने कभी हिस्सा नहीं लिया। फिल्मों में आने का तो मैंने कभी सोचा ही नहीं था।' स्कूल के बाद इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू हुई। जिंदगी तय रास्ते पर चल रही थी। किसी को अंदाजा नहीं था कि यही लड़की आगे चलकर बॉलीवुड की बड़ी स्टार बनेगी। बी.टेक के दौरान एक सलाह ने बदल दी जिंदगी- इंजीनियरिंग के दौरान एक दिन किसी ने कृति से कहा, 'तुम्हारी हाइट अच्छी है, मॉडलिंग क्यों नहीं ट्राय करती?' पहली प्रतिक्रिया थी- 'नहीं... ये मेरे बस की बात नहीं।' लेकिन फिर उन्होंने सोचा कि कोशिश करने में नुकसान नहीं है। अगर कुछ नहीं हुआ, तो कम से कम कॉन्फिडेंस बढ़ जाएगा। यही फैसला उनकी जिंदगी का बड़ा टर्निंग पॉइंट बन गया। बहन ने खींची तस्वीरें- और किस्मत ने नया दरवाजा खोल दिया-कृति के पास प्रोफेशनल पोर्टफोलियो नहीं था। उनकी छोटी बहन नूपुर ने घर पर ही कुछ तस्वीरें खींचीं। आज उन तस्वीरों को देखकर कृति खुद हंस पड़ती हैं। वह कहती हैं, 'आज भी जब वो तस्वीरें देखती हूं तो हंसी आती है कि कितनी अजीब थीं।' उन्होंने वही तस्वीरें एक वेबसाइट पर चल रहे फ्रेश फेस कॉन्टेस्ट में भेज दीं। इनाम था- मशहूर फोटोग्राफर डब्बू रत्नानी से मुफ्त पोर्टफोलियो शूट। कृति को सिर्फ इतना पता था कि डब्बू रत्नानी से फोटोशूट महंगा होता है। फैशन और मॉडलिंग की दुनिया के बारे में उन्हें कुछ भी नहीं मालूम था। किस्मत ने साथ दिया...वह कॉन्टेस्ट जीत गईं। यहीं से मॉडलिंग का पहला कॉन्ट्रैक्ट मिला और फिल्मों तक जाने वाली राह खुली। कृति सेनन -'मैंने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन फिल्मों में आऊंगी। मैं बहुत शर्मीली थी। स्टेज पर जाने से भी डरती थी।' पहला फोटोशूट... और घर जाकर फूट-फूटकर रोईं-किसी नए इंसान के लिए कैमरे के सामने खड़ा होना आसान नहीं होता। कृति के लिए भी नहीं था। उन्हें नहीं पता था कि कैमरे की तरफ कैसे देखना है, हाथ कहां रखने हैं और एक्सप्रेशन कैसे देने हैं। शूट के दौरान फोटोग्राफर ने मुस्कुराते हुए सिर्फ इतना कहा, 'ये तुम्हारा पहला फोटोशूट है ना?' बात सामान्य थी, लेकिन कृति को लगा कि शायद वह खराब काम कर रही हैं। शूट खत्म हुआ- वह सीधे घर पहुंचीं और रो पड़ीं। आज भी कृति मानती हैं कि अगर उन्हें लगता है कि उन्होंने 100 प्रतिशत नहीं दिया, तो यह बात उन्हें लंबे समय तक परेशान करती है। पहले रैंप शो में सबके सामने डांट पड़ी... ऑटो में बैठकर रोती रहीं- अगर फोटोशूट मुश्किल था, तो पहला रैंप शो उससे भी कठिन साबित हुआ। नर्वसनेस के कारण रैंप पर कोरियोग्राफी में गलती हो गई। शो खत्म हुआ तो कोरियोग्राफर ने करीब 50 मॉडल्स के सामने उन्हें डांट दिया। कृति कुछ नहीं बोलीं। चुपचाप बाहर निकलीं...एक ऑटो में बैठीं...और पूरे रास्ते रोती रहीं। घर पहुंचकर भी काफी देर तक उनके आंसू नहीं रुके। मां ने उन्हें समझाते हुए कहा, 'मुझे नहीं लगता कि यह दुनिया तुम्हारे लिए बनी है। यहां टिकना है तो बहुत मजबूत बनना पड़ेगा। लोगों की बातें सुनकर टूटोगी तो आगे नहीं बढ़ पाओगी।' शायद यही वह दिन था, जब कृति ने तय किया कि अब रोना बंद... सीखना शुरू। हार मानना कभी नहीं सीखा-कृति मानती हैं कि उनके अंदर यह आदत हमेशा से रही है। अगर वह गिरती हैं, तो दोबारा उठकर कोशिश करती हैं। वह कहती हैं, 'मैं आसानी से हार नहीं मानती। शायद यही वजह है कि हर बार गिरने के बाद मैंने खुद को एक और मौका दिया। धीरे-धीरे मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया।' यही जिद आगे चलकर उन्हें मॉडल से अभिनेत्री और फिर नेशनल अवॉर्ड विजेता कलाकार बनाने वाली थी। मुंबई में अकेली रहने लगीं, जीमैट की तैयारी भी करती थीं- परिवार के कहा- पहले सपना पूरा करो- पहले रैंप शो की डांट और शुरुआती असफलताओं के बाद कृति सेनन ने हार नहीं मानी। मॉडलिंग आगे बढ़ रही थी, लेकिन फिल्मों का रास्ता अभी भी धुंधला था। इसी बीच उन्होंने मुंबई आने का फैसला किया। यह आसान नहीं था, क्योंकि वह कभी घर से दूर नहीं रही थीं। 'मैं कभी हॉस्टल में नहीं रही थी'-कृति बताती हैं, 'मैं हमेशा अपने परिवार के साथ रही थी। घर में हर सुविधा थी। कॉलेज तक कार चलाना सीख लिया था, लेकिन कभी अकेले रहने की नौबत नहीं आई थी।' मुंबई आने के शुरुआती पांच-छह महीने आसान रहे, क्योंकि उस समय उनके पिता की पोस्टिंग भी मुंबई में थी। लेकिन उसके बाद... पापा वापस चले गए और पहली बार कृति पूरी तरह अकेली रह गईं। किराए का घर... कामवाली... खाना... सारी जिम्मेदारी खुद संभाली- जिंदगी बदल चुकी थी। किराए का घर लेना, खर्च संभालना, खाना बनवाना, कामवाली का इंतजाम करना... हर छोटी-बड़ी जिम्मेदारी उनके कंधों पर थी। इसके साथ ही वह फिल्मों के लिए ऑडिशन दे रही थीं। इसी दौरान वह जीमैट की तैयारी भी कर रही थीं। घरवालों ने उनके लिए प्लान-बी भी तैयार रखा था। अगर एक्टिंग में बात नहीं बनी, तो आगे की पढ़ाई करके दूसरा करियर बनाया जा सकता था। लेकिन कृति के मन में अब सिर्फ एक सपना था। फिल्म इंडस्ट्री के बारे में कुछ नहीं जानती थीं-मुंबई पहुंचकर उन्हें सबसे ज्यादा अनजान दुनिया ने परेशान किया। कृति कहती हैं, 'मुझे समझ ही नहीं आता था कि शुरुआत कहां से करूं। किससे मिलूं, किस प्रोडक्शन हाउस में जाऊं, कौन-सी फिल्म करनी चाहिए और कौन-सी नहीं। मुझे कुछ भी नहीं पता था।' वह किसी फिल्मी परिवार से नहीं थीं। उनके लिए बॉलीवुड सिर्फ पर्दे की चमक थी। पर्दे के पीछे की दुनिया बिल्कुल नई थी। कृति सेनन:- जब आप किसी फिल्मी परिवार से नहीं आते, तो चुनौती सिर्फ एक्टिंग की नहीं, बल्कि अपनी पहचान बनाने की भी होती है। इंडस्ट्री में बराबरी का मौका आसानी से नहीं मिलता। 'मैं सिर्फ शाहरुख, माधुरी और ऋतिक की फैन थी'-कृति बताती हैं कि उन्हें फिल्मों से प्यार था। वह माधुरी दीक्षित, शाहरुख खान और ऋतिक रोशन की बड़ी फैन थीं। लेकिन वह मानती हैं कि फैन होना और इंडस्ट्री को समझना अलग बातें हैं।

कलाकार को ऐसा परिवार नहीं मिलता। कृति मानती हैं कि यह उनकी सबसे बड़ी ताकत थी। दोस्त ने कहा- फिल्मों में गई तो शादी नहीं होगी- सपनों के रास्ते में सिर्फ संघर्ष नहीं आया...लोगों की सोच भी सामने आई। कृति बताती हैं कि उनके एक दोस्त ने उनसे कहा था, 'अगर तुम मॉडलिंग या फिल्मों में गईं, तो बाद में शादी करने में दिक्कत होगी।' यह सुनकर उन्हें हैरानी हुई। उन्हें लगा कि उनकी ही पीढ़ी के लोग आज भी इतनी पुरानी सोच रखते हैं। लेकिन उन्होंने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया। उनके लिए उस समय शादी नहीं...सपना ज्यादा जरूरी था। एक बात ने जिंदगी बदल दी- कृति कहती हैं, 'मुझे हमेशा लगता था कि अगर मैंने कोशिश ही नहीं की, तो पूरी जिंदगी यही सोचती रहूंगी कि शायद मैं कर सकती थी।' यही सोच उन्हें हर मुश्किल के बाद आगे बढ़ाती रही। उन्हें मंजिल नहीं दिख रही थी...लेकिन भरोसा था कि चलते रहे, तो रास्ता जरूर मिलेगा। स्टार किड्स ले गए फिल्में, महीनों तक नहीं मिला एक भी ऑडिशन-मुंबई आकर कृति सेनन ने सोचा था कि मेहनत करेंगी और धीरे-धीरे रास्ता बन जाएगा। लेकिन जल्द ही समझ आ गया कि बॉलीवुड में सिर्फ टैलेंट काफी नहीं होता, खासकर तब जब फिल्मी बैकग्राउंड न हो। हर दिन उम्मीद से शुरू होता था...और कई दिन निराशा के साथ खत्म हो जाते थे। कृति बताती हैं कि कई फिल्मों के लिए उन्होंने ऑडिशन दिए। फिल्म में नए चेहरे की तलाश थी। उन्हें बुलाया गया...उन्होंने तैयारी की...ऑडिशन दिया...उम्मीद भी जगी...लेकिन आखिर में रोल किसी स्टार किड या स्थापित कलाकार को मिल गया। कृति कहती हैं, 'उस समय मन में यही सवाल आता था कि अगर लेना ही नहीं था, तो फिर ऑडिशन क्यों कराया?' हर बार उम्मीद टूटती थी, लेकिन अगली सुबह फिर नए ऑडिशन की तैयारी शुरू हो जाती थी। महीने गुजर जाते थे, कोई ऑडिशन नहीं आता था-रिजेक्शन से ज्यादा मुश्किल था... इंतजार। कई-कई महीने गुजर जाते थे, जब कोई ऑडिशन नहीं आता था। फोन नहीं बजता था। कोई कॉल नहीं... कोई मीटिंग नहीं... कोई उम्मीद नहीं... नए कलाकार के लिए यही सबसे कठिन दौर होता है। कृति कहती हैं कि उस समय लगता था जैसे जिंदगी रुक गई हो, क्योंकि इंडस्ट्री में कोई उन्हें जानता तक नहीं था। 'मैं मां को दिन में 10-10 बार फोन करती थी'- अकेलापन धीरे-धीरे मानसिक दबाव में बदलने लगा। भविष्य की चिंता- काम न मिलने का डर... और परिवार से दूर रहने के दर्द के बीच उनकी सबसे बड़ी ताकत थीं- उनकी मां। कृति उस दौर को याद कर इमोशनल हो जाती हैं। वह करती हैं, 'मैं मां को दिन में दस-दस बार फोन करती थी। कई बार सिर्फ रोती रहती थी। समझ नहीं आता था कि आगे क्या होगा।' हर बार मां उन्हें एक ही बात कहतीं- 'धैर्य रखो... मेहनत करती रहो... सही समय जरूर आएगा।' यही भरोसा उन्हें टूटने नहीं देता था। कृति सेनन (एक्ट्रेस)-आउटसाइडर होने की सबसे बड़ी मुश्किल यही है कि हर कदम पर खुद को साबित करना पड़ता है। आउटसाइडर होना सबसे बड़ी चुनौती था- कृति मानती हैं कि किसी फिल्मी परिवार से न होना अपने आप में संघर्ष है। वह कहती हैं, 'आज किसी स्टार किड की पहली फिल्म आती है, तो लोग पहले से उसे जानते हैं। मीडिया में चर्चा होती है। लेकिन जब कोई बिल्कुल नया लड़का या लड़की आता है, तो लोगों को पता भी नहीं चलता कि उसकी फिल्म कब रिलीज हुई।' यही वजह थी कि उन्हें हर फिल्म, हर ऑडिशन और हर किरदार के लिए खुद को बार-बार साबित करना पड़ता था। 'मॉडल्स एक्टिंग नहीं कर सकतीं'- संघर्ष सिर्फ रोल पाने का नहीं था। लोगों ने उन्हें लेकर पहले से राय बना ली थी। कई लोगों का मानना था कि मॉडल सिर्फ दिखने में अच्छी होती हैं, वे अभिनय नहीं कर सकतीं। कृति को अक्सर सिर्फ 'खूबसूरत चेहरा' समझा जाता था। उन्हें लगता था कि लोग उनकी मेहनत नहीं, सिर्फ उनका लुक देख रहे हैं। 'बरेली की बर्फी' के लिए भी लोगों को भरोसा नहीं था-जब अश्विनी अय्यर तिवारी की फिल्म 'बरेली की बर्फी' का ऑफर मिला, तब भी कई लोगों ने सवाल उठाए। लोगों का कहना था कि कृति छोटे शहर की साधारण लड़की का किरदार नहीं निभा पाएंगी। लेकिन कृति ने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने किरदार को समझा, उसकी भाषा सीखी, उसका व्यवहार अपनाया। फिल्म रिलीज हुई, तो वही किरदार उनके करियर का बड़ा मोड़ बन गया। 'बिट्टी मिश्रा' के रूप में कृति ने साबित कर दिया कि वह सिर्फ ग्लैमरस रोल निभाने वाली अभिनेत्री नहीं हैं। 'पानीपत' में कहा गया- मराठी लड़की जैसी नहीं लगती- 'बरेली की बर्फी' के बाद भी सवाल खत्म नहीं हुए। फिल्म 'पानीपत' के दौरान लोगों ने कहा- 'कृति मराठी लड़की जैसी नहीं लगतीं।' शुरुआत में यह डर खुद कृति के मन में भी था। वह सोचती थीं कि पता नहीं इस किरदार में कैसी लगेंगी। लेकिन जैसे ही उन्होंने कॉस्ट्यूम पहना, मेकअप किया और किरदार में उतरना शुरू किया, सारा डर गायब हो गया। उन्हें एहसास हुआ कि कलाकार की असली पहचान उसका अभिनय होता है, सिर्फ चेहरा नहीं। कृति की सबसे बड़ी सीख-लगातार रिजेक्शन, आलोचना और इंतजार ने उन्हें एक बात सिखाई- दूसरों की राय आपकी पहचान तय नहीं कर सकती। उन्होंने हर 'नहीं' को अगली 'हां' की तैयारी बना लिया। यही सोच आगे चलकर उन्हें उनके करियर की सबसे बड़ी फिल्म तक ले गई। 'मिमी' करने से लोगों ने रोका, लेकिन उसी फिल्म ने दिलाया नेशनल अवॉर्ड-'बरेली की बर्फी' के बाद कृति सेनन ने साबित कर दिया था कि वह सिर्फ ग्लैमरस रोल निभाने वाली अभिनेत्री नहीं हैं। फिर भी उन्हें लगता था कि इंडस्ट्री उन्हें पूरी तरह कलाकार के रूप में स्वीकार नहीं कर रही। उन्हें ऐसे किरदारों का इंतजार था, जो उनके अभिनय की असली परीक्षा लें। यह इंतजार फिल्म 'मिमी' के साथ खत्म हुआ। 'इतनी जल्दी मां का रोल मत करो'-जब कृति के पास 'मिमी' की स्क्रिप्ट आई, तो कई लोगों ने सलाह दी कि इतनी कम उम्र में मां का किरदार निभाना सही फैसला नहीं होगा। लोगों का मानना था कि इससे उनकी ग्लैमरस इमेज प्रभावित होगी और करियर पर असर पड़ सकता है। लेकिन कृति ने वही किया, जो हमेशा करती आई थीं। उन्होंने लोगों की नहीं, कहानी की सुनी। कृति कहती हैं, 'मेरे लिए सबसे जरूरी कहानी थी। मुझे उस किरदार का सफर बहुत खूबसूरत लगा। अगर कहानी दिल को छू रही है, तो बाकी बातें मायने नहीं रखतीं। मुझे वह फैसला कभी जोखिम नहीं लगा।' किरदार के लिए बढ़ाया वजन, खुद को पूरी तरह बदल दिया- 'मिमी' सिर्फ एक फिल्म नहीं थी। यह कृति के करियर की सबसे बड़ी चुनौती थी। सरोगेट मां के किरदार को पर्दे पर सच्चाई के साथ उतारने के लिए उन्होंने वजन बढ़ाया, लुक बदला और किरदार की भावनाओं को समझने में महीनों लगाए। जब फिल्म रिलीज हुई, तो दर्शकों के साथ समीक्षकों ने भी उनके अभिनय की जमकर तारीफ की। जिस अभिनेत्री को कभी सिर्फ 'खूबसूरत चेहरा' कहा जाता था, वही अब अभिनय के लिए सराही जा रही थी। नेशनल अवॉर्ड ने बदल दी पहचान-'मिमी' के लिए कृति सेनन को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री) मिला। यह सिर्फ एक अवॉर्ड नहीं था। यह उन तमाम रिजेक्शन, इंतजार, तानों और संघर्षों का जवाब था, जिनसे वह वर्षों तक गुजरी थीं। जिस लड़की को कभी कहा गया था कि मॉडल एक्टिंग नहीं कर सकती... उसी ने देश का सबसे बड़ा अभिनय सम्मान जीत लिया। आज भी मानती हैं-रिजेक्शन जरूरी थे-आज जब कृति अपने संघर्ष के दिनों को याद करती हैं, तो उन्हें किसी से शिकायत नहीं होती। वह मानती हैं कि अगर शुरुआत में उन्हें इतनी असफलताएं नहीं मिली होतीं, तो शायद वह इतनी मजबूत कलाकार नहीं बन पातीं। उनके शब्दों में, 'अगर मुझे शुरुआत में इतने रिजेक्शन नहीं मिले होते, तो शायद मैं आज की कृति सेनन नहीं होती। हर रिजेक्शन ने मुझे कुछ नया सिखाया और बेहतर बनने के लिए मजबूर किया।' हर किरदार के साथ तोड़ा एक नया स्टीरियोटाइप- 'बरेली की बर्फी' में छोटे शहर की लड़की- 'पानीपत' में ऐतिहासिक किरदार- 'मिमी' में सरोगेट मां- 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' में रोबोट- और 'दो पत्ती' में अभिनेत्री के साथ निर्माता- कृति ने हर बार नया जोखिम उठाया। शायद यही वजह है कि आज उन्हें सिर्फ स्टार नहीं, बल्कि भरोसेमंद अभिनेत्री माना जाता है।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।